रामाश्रम सत्संग, गाज़ियाबाद का डिजिटल प्रकाशन

ग़ज़लें

(मारफ़त की ग़ज़लों का संकलन)

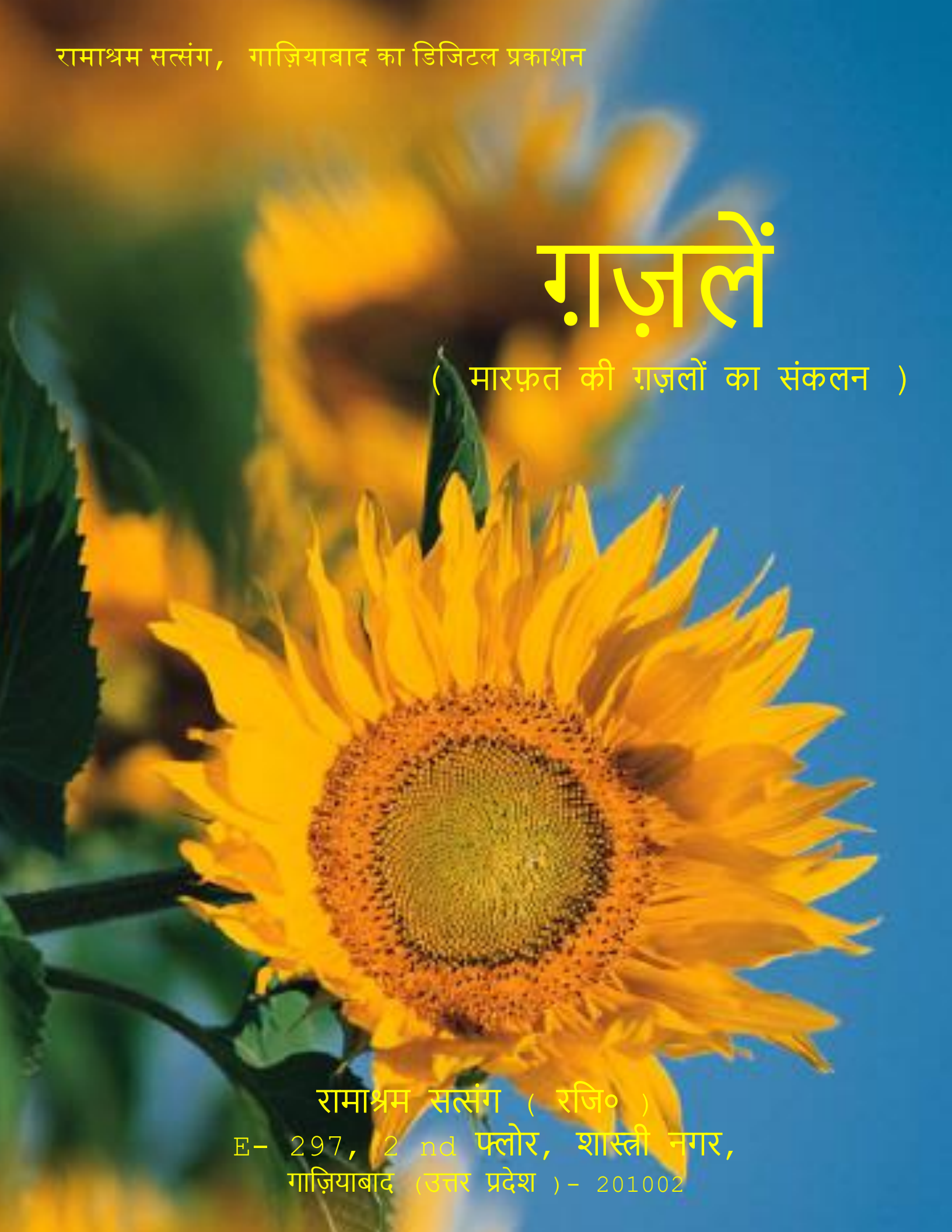

रामाश्रम सत्संग (रजि०)
E- 297, 2 nd फ्लोर, शास्त्री नगर,
गाज़ियाबाद (उत्तर प्रदेश)- 201002

प्रकाशक

आचार्य, रामाश्रम सत्संग,

सिकन्द्राबाद (उ. प्र.)

सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रिंट संस्करण : जून, 1975

डिजिटल संस्करण दिसम्बर, 2023

(मूल्य 2/-)

मुद्रक :

सीमा प्रिंटर्स,

187,गाँधी नगर,

गाज़ियाबाद 1

निवेदन

प्रेमी भाइयों का बहुत दिनों से आग्रह था कि जो ग़ज़लें और उर्दू की कवितायेँ सत्संग में यदा-कदा गा जाती हैं,

उनको एक पुस्तक के रूप में प्रकाशित कर दिया जाय ! इसी उद्देश्य को लेकर यह संग्रह प्रकाशित किया जा रहा है ! इनका

संकलन श्री ओम प्रकाश जौहरी (जयपुर) ने किया है, जिसके लिए मैं उनका आभारी हूँ ! आशा है प्रेमी भाई इन ग़ज़लों से

लाभ उठायेंगे !

दास,

करतार सिंह

दिल्ली

१-६-१९७५.

अनुक्रमाणिका

क्रमांक	ग़ज़ल	पृष्ठ संख्या
1.	तेरा नाम ख़ालिक़े दो-जहाँ	4
2.	मैं तुझे पाने की हरदम जुस्तजू करता रहूँ	5
3.	मेरे साक़िया बता दे, वो शराब कौन सी है	6
4.	आँखों में बस क दिल में समा कर चले गए	7
5.	रंग वाले देर क्या है	8
6.	दिखला के झलक रूपोश हुए	9
7.	साक़ी मये-उलफ़त से भर दे मेरा पैमाना	10
8.	आँख में उनका तसब्बुर	11
9.	रिंदों की नज़र में मयख़ाना	12
10.	दूर से आये थे साक़ी	13
11.	रुख़ से पर्दा हटाके सामने	14
12.	अगर महबे ख़याले जलव्ये जनाना हो जाये	15
13.	दिल तो है बराये नाम	16
14.	देखा नहीं हमने कहीं	17
15.	यार की मर्ज़ी के ताबे यार का दम भर के देख	18
16.	तुम जाने आरज़ू हो, तुम रूहे ज़िंदगी हो	19
17.	जिसको देखो मस्त और मदहोश मयख़ाने में है	20
18.	शामे ग़म तुम से यह बात रोशन हुई	21
19.	समा के चश्मे-उलफ़त में, न पूछो मुझ से क्या	22

तुम हो	
20.मुझे क्या तलाश है ऐ बे-ख़बर कि ख़ुदा कहाँ है कहाँ नहीं	23
21.बुत में भी तेरा जल्वा यारब नज़र आता है	24
22.नाम तेरा रहे लब पै तेरा हरदम मेरे	25-26
23.तेरे दामने करम का जिसे मिल गया सहारा	27
24.तुम्ही कह दो तुम्हारे दर से दीवाने कहाँ जायें	28
25.तुम्हारी अंजुमन से उठ के दीवाने कहाँ जाते	29
26.अज़ल से दोनों हुस्नो इश्क़ मेरे दिल में रहते हैं	30
27.तुझी को जाने-जां दैरो-हरम में जलवागर देखा	31
28.रंगे महफ़िल जमा गया कोई	32
29.मेरी ज़िंदगी है मालिक तेरे ग़म से आशकारा	33
30.जहाँ रक़्स करती है	34
31.दुई में तज़करा तौहीद का पाया नहीं जाता	35
32.कौन कहता है तुझे मैंने भुला रखा है	36
33.वो दिल ही नहीं जिस दिल में ऐ सावरिया तेरी याद न हो	37
34.सना बशर के लिए है बशर सना के लिए	38
35.रुख़ से पर्दा उठादे ज़रा साक़िया	39-40
36.मय छलकती रहे साक़ी तेरे पैमाने से	41
37.कभी ए हक़ीक़ते मुन्तज़िर नज़र आ लिबासे मजाज़ में	42-43

38.दोनों जहाँ के आशिक़ तेरे तुझ पर वारे बैठे हैं	44-45
39.खेंची है तसब्बुर में तस्वीरें हमागोशी	46
40. लगता नहीं है दिल मेरा उजड़े दियार में	47
41.ऐ न थी हमारी क़िस्मत कि विसाले यार होता	48
42.शिकायत क्या, लबों पर आह भी लाया नहीं करते	49
43.इक चश्मे इनायत का बन्दा भी सवाली है	50
44.ख़ामोश है गर तस्बीरे सनम	51
45.बहुत ढूंढा न पाया आसमानों में ज़मीनो में	52-53
46.बना बना के तमन्ना मिटाई जाती है	53
47.श्री जगदीश बृन्दावन बिहारी	54-58
48.अजब हे कुछ मेरी हालत का इज़हार	59-64
49.मुहब्बत की मन्ज़िल पै ओ जाने वाले	65
50.न ख़याले दीनो- ईमाँ न ख़याले बन्दगी है	66
51.हर शै में तजल्ली है पैदा, हर शै में नज़ारे होते हैं	67
52.मरने की दुआयें क्यों मांगें, जीने की तमन्ना कौन करे	68
53.दम लब पै है जुबाँ पर नामों का तराना	69-70
54.दिखादे जल्लवे दीदार अपना	71-73
55.साक़ी चमन में आके अगर बेनक़ाब हो	74

56.सरापा दीद बन कर हसरते दीदार में आये	75
57.देख अफशां मेरी उलफ़त का कहीं राज़ न हो	76
58.तेरे कूचे में अरमानों की दुनियाँ ले के आया हूँ	77
59.नाम तेरा रहे लब पै हरदम मेरे	78-79
60.जामे राहत से सभी सरशार हों	80
61.ये तन उनका, ये मन उनका, ये जी उनका, ये जां उनकी	81
62.लोग कुछ मस्जिद गए, कुछ बुतखाने गए .	82
63.तुम्हारे दर पे आकर ही सबब पाया है जीने का	83.
64.जब तलक है सांस तब तक बंदगी क़ायम रहे	84.
65.इस तरह से बाद में तेरे जिया करें	85.
66.चारसू सारे नज़ारे आपके	86.
67.यही है आरज़ू जब तक रहे यह ज़िंदगी क़ायम	87.

(1)

तलाश

तेरा नाम ख़ालिक़े दो-जहाँ ----------

तेरा नाम ख़ालिक़े दो-जहाँ, तू ख़ुदाये अर्शे मुक़ाम है,
तेरी बन्दगी में है सर झुके, तुझे लाख़-लाख़ सलाम है !
तू ही हरम, तू ही बुतक़दा नहीं फ़र्क़ दोनों में कुछ ज़रा,
वहाँ पर्दे में है निहाँ ख़ुदा, यहाँ जल्वाग़र वही राम है !
पियूँ शौक़ से न मैं क्यों इसे कि भरा है वादए-इश्क़ से,
जो दिखाये जल्वए दिलरुबा, ये वो जाम है, ये वो जाम है !
तेरी याद कैसे भुलाऊँ मैं, तुझे छोड़ के कहाँ जाऊँ मैं,
तेरी याद दिल में है ऐ ख़ुदा, तो ज़ुबाँ पै तेरा ही नाम है !
मुझे देख लुत्फ़ोकरम से तू, यही एक है मेरी आरज़ू ,
तेरे दर पै आया हूँ सुन के ये तेरा फ़ैज़ ख़ल्क़ पै आम है !
नहीं 'हमदम' अच्छी ये ग़फ़लतें कि अजल है सर पै खड़ी हुई,
करो तुम भी अब तो ख़ुदा -ख़ुदा कि दुआ का वक़्त है शाम है !

==========

शब्दार्थ :- ख़ालिक़े दो जहाँ -इहलोक और परलोक का स्वामी / अर्शे-मुक़ाम -अनन्त ऊँचा / हरम-मस्जिद /
बुतक़दा -मन्दिर / निहाँ-छिपा / जल्वागर-व्याप्त / बादए इश्क़ - प्रेम की मदिरा / जल्वए दिलरुबा - प्रीतम के दर्शन , जाम -प्याला / लुत्फोकरम-प्रेम तथा कृपा की दृष्टि / आरज़ू -विनती / फ़ैज़ -कृपा / ख़ल्क़ -श्रष्टि / अजल - मृत्यु

अरमान

मैं तुझे पाने की हरदम जुस्तजू करता रहूँ ----------

मैं तुझे पाने की हरदम जुस्तजू करता रहूँ !
सब से तेरे प्यार की मैं गुफ़्तगूँ करता रहूँ !!
रात दिन करता रहूँ तेरी नमाज़े इश्क़ मैं !
दिल में सिजदा आँसुओं से मैं बजू करता रहूँ !!
राज़े-हक़ की नेमतें बख़्शी हैं जो तूने मुझे !
रात दिन उनकी नुमायश चारसू करता रहूँ !!
दिल की यह चाहत है दिल में तू रहे !
इसके सिवा हो न कोई आरज़ू, यह आरज़ू करता रहूँ !!
मैं तू बनूँ, तू तू रहे, मुझ में समा जा इस तरह !
भूल जाऊँ ख़ुद को मैं और 'तू ही तू' करता रहूँ !!
रात दिन ऐसे रहूँ मैं तुझ से महवे-गुफ़्तगू !
हर नफ़स में तुझ को ही मैं रूबरू करता रहूँ !!!

==========

शब्दार्थ :- जुस्तजू -पुरुषार्थ / गुफ़्तगूँ -बातचीत / नमाज़े इश्क़ - प्रेम की उपासना / सिजदा-नतमस्तक / वज़ू- नमाज़ पढ़ने से पूर्व हाथ-पाँव धोना / राजे-हक़ - प्रीतम का भेद / नेमतें-उपहार / चारसू-सब ओर / आरज़ू -हार्दिक इच्छा / महवे गुफ़्तगू - गुणगान में तल्लीन / नफ़स -मन की वासनायें

(3)

जिज्ञासा

मेरे साक़िया बता दे, वो शराब कौन सी है, ----------
मेरे साक़िया बता दे, वो शराब कौन सी है,
जिसे पी के सारी दुनियाँ, तेरे दर पै झूमती है !
तेरी हर नज़र मौहब्बत, मेरी हर नज़र क़यामत,
मैं ख़राबे-ज़िन्दगी हूँ, तू बहारे ज़िन्दगी है !
तू हज़ार बार ठुकरा, मेरा सर यहीं झुकेगा,
तेरे दर पै सिजदा करना, मेरी शाने बन्दगी है !
मैं जानता नहीं हूँ, कुछ दीन और] मज़हब,
तुझे याद करके रोना, यही मेरी ज़िन्दगी है !
तेरी बन्दगी की लज़्ज़त, कोई मेरे दिल से पूछे,
तुझे कैसे भूल जाऊँ, तू हबीबे ज़िन्दगी है !
ये आलम मेरा आलम है, ये ख़ुशी तेरी ख़ुशी है,
मुझे जिस तरह से रखे, तेरी बन्दा-परवरी है !
मेरा दामने गदाई, तेरे आगे क्यों न फैले,
तू मताये दो-जहाँ है, तेरे घर में क्या कमी है !
तेरा एहतराम साया, कहीं मुझ से खो न जाये,
अभी सामने न आना, अभी दौरे बे-ख़ुदी है !
ज़रा चिलमनें उठा दे, ग़मे आशिक़ी का सदक़ा,
इन्हीं चिलमनों में पिनहाँ मेरा राज़े ज़िन्दगी है !!

==========

शब्दार्थ :- लज़्ज़त-स्वाद, मिठास / हबीब-प्यारा / बन्दा परवरी - भक्त वत्सलता / दामने गदाई - भिक्षुक की झोली 1 मताये दो जहाँ - इहलोक और परलोक का स्वामी, पालन कर्ता / एहतराम - आदर / चिलमन -आवरण,पर्दा /पिन्हा -छिपा हुआ

हसरत

आँखों में बस के दिल में समा कर चले गये !----------

आँखों में बस के दिल में समा कर चले गये !
ख्वाबीदा ज़िन्दगी थी ,जगा कर चले गये !!
हुसने अजल की शान दिखा कर चले गये !
एक बाक़ा सा वो याद दिलाकर चले गये !!
दे कर ख़ुद अपने हाथों से एक दर्द ला-दवा !
मेरी ख़ुशी को होश में ला कर चले गये !!
आये थे दिल की प्यास बुझाने के वास्ते !
एक आग सी वो और लगा कर चले गये !!
आये थे चश्मे शौक़ की हसरत निकालने !
सरता क़दम निगाह मिला कर चले गये !!
लब थर थरा के रह गये लेकिन वो ए 'जिगर'
जाते हुए निगाह मिलाकर चले गये !!

==========

शब्दार्थ :- ख़्वाबीदा ज़िन्दगी - सोया सा जीवन / हुसने अजल - दैवी सौन्दर्य / बाक़ा -घटना / ला-दवा -असाध्य /चश्मे शौक़ -प्यासे नयन / लब-होंठ

(5)

पिया का रंग

रंग वाले देर क्या है ----------

रंग वाले देर क्या है, चोला मेरा रंग दे !
और सारे रंग धो कर, रंग अपना रंग दे !!
बहुत से रंगों से मैंने आज तक रंगा इसे !
पर वो सारे फींके निकले, अब तू गाढ़ा रंग दे !!
रंग दिए जिस रंग से तू ने ज़मीनो आसमाँ !
उसमें ही चोला मेरा ए रंग वाले रंग दे !!
जिस तरफ़ को देखता हूँ, रंग तेरा देखता !
मैं ही एक बे-रंग हूँ, रंग तेरा देखता !
तब मैं समझूँगा तुझे और तेरी अन्दाज़ियाँ !!
जितना धोऊँ उतना चमके ऐसा बस तू रंग दे !!!

==========

क्या जीव ईश्वर से मिलने के बाद नाश हो गया ? नहीं, वह अमर हो गया ! जहाँ-जहाँ ईश्वर है, वहीँ वह जीव भी मौज़ूद है और जब तक ईश्वर की सत्ता क़ायम है, वह भी मौज़ूद है ! इसी तरह मोक्ष-पुरुष मरते नहीं ! वह हमेशा-हमेशा ईश्वर में रहकर, सर्वव्यापी होकर हमेशा-हमेशा ज़िन्दा रहते हैं ! इसीलिए गुरुजन मरते नहीं !

---- परमसंत डॉ. श्रीकृष्ण लाल जी महाराज

ग़ ज़ ल

दिखला के झलक रूपोश हुए, ----------

दिखला के झलक रूपोश हुए, जी भर के नज़ारा हो न सका,
एक बार हुआ दीदार हमें, लेकिन वो दुबारा हो न सका !
वो जितने छिपे रूपोश हुए, उतनी ही मुहब्बत बढ़ती गयी,
तुम ने तो किनारा कर ही लिया, हम से तो किनारा हो न सका !
तूफ़ान में किश्ती डूब गयी, इमदाद किसी ने कुछ भी न की,
अल्लाह भी था, मल्लाह भी था, किश्ती का सहारा हो न सका !
अंजामे 'जिगर' मालूम न था, भूले से मौहब्बत कर बैठे,
यह जान भी दी और माल दिया, लेकिन वो हमारा हो न सका !

शब्दार्थ :- रूपोश - छिप जाना / नज़ारा-दर्शन / दीदार - दर्शन / इमदाद -सहायता /अंजाम - फल, नतीज़ा

==========

सच्चा प्यार वह है जिसकी वजह समझ में न आवे लेकिन बगैर उसके रह भी न सके ! तू नहीं तेरा ख़्याल ही सही !

----- परमसंत डॉ. श्रीकृष्ण लाल जी महाराज

हो ली

साक़ी मये-उलफ़त से भर दे मेरा पैमाना ! ----------

साक़ी मये-उलफ़त से भर दे मेरा पैमाना !

दिल खोल के खेलेगा होली तेरा मस्ताना !

उड़ता है रंग हरसू पिचकारियां चलती हैं !

दीवानों का होली की मस्ती से है याराना !

हाँ दिल है उमंगों पर क्या देखता है साक़ी !

सरशार मुझे करदे सदक़े तेरे जानाना !

सब रंग में हैं लथपथ गुलफ़ाम बने चेहरे !

वो रंग जमे आलम बन जाये परीख़ाना !

मिट जाये कुदूरत सब की दिल साफ़ हों यारों के !

होली मिलें खुश हो के अपना हो या बेगाना !

पीरी में जवानी के आते हैं मज़े 'बेकल' !

फागुन का महीना है क्या मौसमे शाहाना !

==========

शब्दार्थ :- साक़ी - मदिरा पिलाने वाला (गुरु) / मये-उलफ़त - प्रेम की मदिरा / पैमाना - प्याला / हरसू - चारों ओर / याराना - मित्रता /

ग़ज़ल

आँख में उनका तसब्बुर ----------

आँख में उनका तसब्बुर, याद उनकी दिल में है,
कोई इस मन्ज़िल में है तो कोई उस मन्ज़िल में है !
जब से उस परदानशीं का इश्क़ मेरे दिल में है !
इक नई आफ़त है सर पर, जां बड़ी मुश्किल में है !
वो न आये हैं, न आयें, इसकी कोई परवा नहीं,
याद उनकी, उनका नक़्शा, उनकी सूरत दिल में है !
ठोकरे खाता हुआ फिरता है सहरे में 'बशीर' ,
क़ैस तो दीवाना था, लैला तो मेरे दिल में है !

पहले-पहल तो गुरु से प्रेम एक साथ नहीं होता, धीरे-धीरे बढ़ता है ! जहाँ हम अपने माता-पिता, भाई, वगैरह से प्यार करते हैं, उतना ही हम शुरू में गुरु से करें ! फिर जब धीरे-धीरे गुरु की महिमा को समझने लगते हैं, प्रीति और प्रतीति होने लगती है, तब आहिस्ता-बाहिस्ता अपना विश्वास ख़ुद ही बढ़ता जाता है ! इसी को आत्म-जागृति कहते हैं !

--------- *परमसंत डॉ. श्रीकृष्ण लाल जी*

==========

शब्दार्थ :- तसब्बुर - ध्यान / पर्दानशीं - परदे में रहने वाला / इश्क़ - प्रेम / जॉ - जान / परवा - चिन्ता /

सेहरे - रेगिस्तान / क़ैस - मजनू / दीवाना - पागल

ग़ज़ल

रिन्दों की नज़र में मयख़ाना ------ -------

रिन्दों की नज़र में मयख़ाना काबे के बराबर होता है,
साक़ी की गली का हर फेरा, एक हज़ के बराबर होता है !
जिस दर पर किसी को निस्बत है, वह जान से बढ़कर होता है,
माशूक़ का ग़म आशिक़ के लिए, ईमां के बराबर होता है !
ऐ क़ौसरे ज़म-जम के मालिक, ऐ अर्शेबरीं वाले आक़ा,
जो तेरी नज़र में मोती है, वह रिन्द पयम्बर होता है !
जिस गुल में बूओ-रंग न हो, वह फूल नहीं है काँटा है,
जिस दिल में तेरी चाह न हो, वो दिल तो पत्थर होता है !
लाखों ही करे इन्सां कोशिश, होता है वही जो होना है,
वह सामने आकर रहता है, क़िस्मत में जो 'अनवर' होता है !

==========

शब्दार्थ :- रिन्द - प्रेम की मदिरा पीने वाले / मैखाना - जहाँ मदिरा पिलाई जाती है (सूफ़ियों की भाषा में गुरु दरबार)

साक़ी - प्रेम की मदिरा पिलाने वाला (गुरु) / निस्बत -प्रेम, लगाव / ईमाँ - ईमान / क़ौसरे बरीं -सबसे ऊँचा, आसमान /

आक़ा - मालिक / पयम्बर -ईश्वर भक्त / बूओ रंग - सुगंध और सुन्दरता

ग़ज़ल

दूर से आये थे साक़ी ---------

दूर से आये थे साक़ी सुन के मयख़ाने को हम !
बस तरसते ही चले अफ़सोस पैमाने को हम !!
मय भी है, मीना भी है, साग़र भी है, साक़ी नहीं !
दिल में आता है, लगा दें आग मयख़ाने को हम !!
बाग़ में लगता नहीं, सहरे से घबराता है दिल !
अब कहाँ ले जाकर बैठें, ऐसे दीवाने को हम !!
क्या हुई तक़सीर हम से , तू बता ए 'नज़ीर' !
ताकि शादिये मर्ग समझें, ऐसे मर जाने को हम !!

शब्दार्थ :- साक़ी - (प्रेम की) मदिरा पिलाने वाला / मयखाना - मदिरालय / पैमाना - प्याला / मीना - शराब पीने का बर्तन / साग़र - शराब की सुराही / सहरा - मरुस्थल / तक़सीर - त्रुटि, गलती / मर्ग - मरना

==========

इन्सानी ज़िन्दगी का आदर्श यह है कि अपने आपको पहचाने कि 'मैं ' क्या हूँ ! ईश्वर को पहचाने और उसमें अपनी हस्ती लय कर दे ! जो इस आदर्श का रास्ता दिखावे वही सच्चा मज़हब है ! जिसने इस आदर्श की प्राप्ति कर ली है, वही सच्चा गुरु है ! जो इस आदर्श को प्राप्त करना चाहता है वही सच्चा भक्त है ! जब ऐसा शिष्य हो और ऐसा गुरु हो तभी सच्चे लक्ष्य की प्राप्ति मुमकिन है !

--------- परमसंत डॉ. *श्रीकृष्ण लाल जी महाराज*

ग़ज़ल

रुख़ से पर्दा हटाके ज़रा सामने ----------

रुख़ से पर्दा उठा के ज़रा सामने, बेहिज़ाब उनका आना गज़ब हो गया !
बर्क़ गिरने लगी, अर्श हिलने लगा, उनका ज़लबा दिखाना गज़ब हो गया !
दरबदर तेरी ख़ातिर मैं रुसवा हुआ, इस मुहब्बत का दुनियाँ में चर्चा हुआ !
आँख से मेरे आँसू झलकने लगे, क्या करूँ मुसकराना ग़ज़ब हो गया !
बे-वफ़ा तेरे जल्वों में हम खो गए, हाय इस मुस्कराहट में गुम हो गये !
तुझको पर्दे में रहना था पर्दानशीं, तेरा पर्दा उठाना ग़ज़ब हो गया !
मक़तबे इश्क़ में हमने सीखा यही, इम्तहाने मौहब्बत बड़ा सख़्त है !
जिसने जो चाहा वो ही सबक़ पढ़ लिया,इश्क़ में लब हिलाना ग़ज़ब हो गया !

==========

शब्दार्थ :- रुख़ - मुखड़ा / बेहिज़ाब - अनावरण / बर्क़ - बिजली / अर्श-आकाश / दरबदर - द्वार-द्वार /

रुसवा -बेइज़्ज़त होना / पर्दानशीं - पर्दे में रहने वाला / मक़तबे इश्क़ - प्रेम की पाठशाला / लब-होंठ

==========

इश्क़े हक़ीक़ी

अगर महबे ख़याले जलव्ये जनाना हो जाये, ----------

अगर महबे ख़याले जलव्ये जनाना हो जाये,
तो मन्ज़िल तूर की मेरा दिल दीवाना हो जाये !
जिसे चाहो तुम अपने होश से बेगाना हो जाये,
जिसे दीवाना तुम कह दो, वही दीवाना हो जाये !
तेरे क़ुर्बान जाऊँ तू बना दे ऐसा दीवाना,
जिसे दीवानगी में देख लूँ, दीवाना हो जाये !
बस इतने आसरे पर रात काटी शम्मा ने रोकर,
कि शायद सुबह तक ज़िन्दा मेरा परवाना हो जाये !
दवा भी कर रहा है चारागर पर यूँ दुआयें भी,
मेरे बीमार को सेहत तो हो, अच्छा न हो जाये !

==========

शब्दार्थ :- महबे ख़याले जलव्ये जनाना -प्रीतम के ज्योतिर्मय दर्शन के ध्यान में डूबा हुआ / दिले वीराना - सूना मन

बेगाना - होश खो बैठना / शम्मा - दीपक / दीवाना - प्रेम में मतवाला / परवाना - शलभ / चारागर - हक़ीम, वैद्य (गुरु) / सेहत - स्वस्थ लाभ

ग़ज़ल

दिल तो है अब बराये नाम ----------

दिल तो है अब बराये नाम, दिल में शिगुफ्तग़ी नहीं !
साज़ है पर सदा नहीं, शमा है पर रौशनी नहीं !!
अब कोई बात भी मेरी माना कि होश की नहीं !
आप को भूल जाऊँ मैं ऐसी तो बेख़ुदी नहीं !!
तेरे करम से बेनियाज़ कौन सी शै मिली नहीं !
झोली ही मेरी तंग है, तेरे यहाँ कमी नहीं !!
आशिक़ी और बैद होश कुफ़्र है, आशिक़ी नहीं !
जिसमें न हो जिनूं नसीब वह कोई ज़िन्दगी नहीं !!
तीर पै तीर खाये जा, यार से लौ लगाये जा !
ज़हर मिले तो ज़हर को पी, इश्क़ है कोई दिल्लगी नहीं !!
हुस्न की बात मान ले, हुस्न से नाज़ को न तोड़ !
उनकी ख़ुशी से काम कर, तेरी ख़ुशी- ख़ुशी नहीं !!

शब्दार्थ :- शिगुफ्तग़ी - खिलावट, प्रसन्नता / साज़ - बाजा / सदा - आवाज़ / शमा - दीपक / करम - कृपा /

बेनियाज़ - ईश्वर (जिसके पास दीनता नहीं है) शै - वस्तु / बकैद होश - होश के साथ / जिनूं - मस्ती, प्रेम का पागलपन / यार - प्रीतम / हुस्न - सौन्दर्य

ग़ ज़ ल

देखा नहीं हमने कहीं --------

देखा नहीं हमने कहीं साक़ी सा सख़ी और !
मदहोश हूँ लेकिन कहै जाता है पी और !!
सेरी नहीं होती, नहीं होती, नहीं होती !
ऐ पीरे-मुग़ाँ और अभी, और अभी और !!
इस आग को हमने कभी बुझते नहीं देखा !
है दिल की लगन, दिल की जलन, दिल की लगी और !!
उल्फ़त ने किया खूगरे आज़ार कुछ ऐसा !
मिलता है मुझे तो रंज तो होती है ख़ुशी और !!
इक़रारे मुहब्बत को निभाये न बने हैं !
दम भर में अभी और है दम भर में अभी और !
जीता हूँ तो कहते हैं कि तू जी के गुज़र जा !
मरता हूँ तो इरशाद वो करते हैं कि जी और !

==========

शब्दार्थ :- सख़ी - दानी / मदहोश - नशे में / सेरी - तृप्ति / पीरे- मुगाँ - समर्थ गुरु / उल्फ़त - प्रेम /

खगूरे आज़ार - दुःख का अभ्यस्त / इकरारे मुहब्बत - प्रीत की रीत / इरशाद - कहना

राज़ी ब रज़ा

यार की मर्ज़ी के ताबे यार का दम भर के देख !
अर्ज़े मतलब कर चुका है तर्क़े मतलब करके देख !!
यार तेरा है तो फिर सारी है तेरी कायनात !
सबको अपना करने वाले उसको अपना करके देख !!
बे-इरादे मरने वाले बा-इरादा मर के देख !
सब तमाशे करने वाले यह तमाशा करके देख !!
मौत भी बन जायेगी इक ज़िन्दगी तेरे लिए !
ज़िन्दगी पर मरने वाले ज़िन्दगी में मर के देख !!
आ गया कामिल दमे-आख़िर वो बामे इन्तज़ार !
मरने वाले चैन से मर देख अब जी भर के देख !!
हर वज़्म पैश ख़ैमा है तेरे आराम का !
सब्र से भी काम ले कुछ दिन मुसीबत भर के देख !!
तर्क़े दुनियाँ, तर्क़े उक़बा, तर्क़े मौला, तर्क़े तर्क !
यानी यूं बे-आरज़ू जीने की आदत करके देख !!

==========

शब्दार्थ :- यार - गुरु (ईश्वर) / मर्ज़ी के ताबे - मर्ज़ी में रहकर / अर्ज़ - निवेदन / तर्क - छोड़ना / कायनात -सृष्टि

बा-इरादा -लक्ष्य के साथ / क़ामिल - पूर्ण गुरु / दमे आख़िर - अन्तिम श्वाँस / बामे इन्तज़ार - प्रतीक्षा के अन्तिम क्षण

ग़ज़ल

तुम जाने आरज़ू हो, तुम रूहे ज़िन्दगी हो----------

तुम जाने-आरज़ू हो, तुम रूहे- ज़िन्दगी हो !

कब तक छिपे रहोगे, इक दिन तो रूबरू हो !!

जिस ख़ाक पर पड़े हों, नक़्शे-क़दम तुम्हारे !

मैं चाहता हूँ मेरा, उस ख़ाक से वज़ू हो !!

मैं ख़ुश नसीब हूँ जो दर मिल गया तुम्हारा !

फिर क्यों मेरी जबीं को काबे की जुस्तजू हो !!

मैं रिन्द तो नहीं हूँ, लेकिन ये सोचता हूँ !

दो चार घूँट पी लूँ, साक़ी जो मेरा तू हो !!

==========

शब्दार्थ :- जाने-आरज़ू - इच्छा का केन्द्र / रूहे-ज़िन्दगी - जीवन के प्राण / रूबरू - सामने / नक़्शे-कदम -चरण चिन्ह / वज़ू -स्नान / दर - द्वार / जबीं -मस्तक / जुस्तजू - तलाश / रिन्द - शराबी / साक़ी - मदिरा पिलाने वाला (गुरु)

==========

जिस हालत में भी उस ईश्वर ने रखा है, चाहे वह बुरी हो या अच्छी, उस में ख़ुश रहो ! दुःख और सुख की दुनिया से ऊपर उठो ! जब तक ज़िन्दगी है, दुःख और सुख तो आते ही रहेंगे ! उनका आना ही ज़रूरी है, लेकिन अपने मन को इससे ऊँचा उठाओ और जो ख़िदमत या फ़र्ज़ ईश्वर ने सुपुर्द किया है, उसे ईमानदारी से और सच्चे दिल से पूरा करो ! हर वक़्त ख़्याल रखो कि यह दुनियाँ ईश्वर की है, हम सब ईश्वर के हैं, जो काम हो रहा है और हम कर रहे हैं, ईश्वर के लिए कर रहे हैं ! हम वहीं से आये है, उसी की दुनियाँ में रह रहे हैं और वहीं जाना है !

------- परमसंत डॉ. श्रीकृष्ण लाल जी महाराज

ग़ज़ल

जिसको देखो मस्त और मदहोश मयख़ाने में है--------

जिसको देखो मस्त और मदहोश मयख़ाने में है !
ऐसा रँगे-बे-ख़ुदी साक़ी के मयख़ाने में है !!
ना तो मतलब दैहर से है, ना है मन्दिर से गरज़ !
मन्ज़िले-हक़ का पता साक़ी के मयख़ाने में है !!
किसके सदक़े में मिलै हम मयकशों को भरके जाम !
कौन महमाँ आज साक़ी तेरे मयख़ाने में है !!
एक दो साग़र में क्या 'ग़ालिब' भला होगा तेरा !
सब पिला दे आज जो कुछ तेरे मयख़ाने में है !!

शब्दार्थ :- मदहोश - मदिरा पीकर मस्त होना / मयख़ाना - मदिरालय / रंगे-बे -ख़ुदी - ऐसा नशा जिसमें अपना होश न हो / दैहर - काबा / मन्ज़िले-हक़ - परमात्मा का घर / सदक़े - संरक्षण / मयकश - शराबी / जाम-प्याला / महमाँ - अतिथि / सागिर - प्याला

==========

गुरु में कितनी ही विद्या क्यों न हो, कितना ही ज्ञान क्यों न हो, कितनी ही शक्ति क्यों न हो, अगर उसने अपने आपको ईश्वर को समर्पण नहीं किया है और ख़ुदी (अहंपना) बाक़ी है, तो वह सच्चा गुरु नहीं है ! अगर अधिकारी शिष्य हो और ऐसा पूर्ण गुरु मिल जाये तभी ईश्वर- दर्शन होते हैं लेकिन शर्त यह है कि पूर्ण श्रद्धा से गुरु के बताये हुए रास्ते पर चलें और दुनियाँ की बड़ी से बड़ी चीज़ त्यागने में न हिचकिचायें, बल्कि ख़ुशी से त्याग दें !

------- परमसंत डॉ. श्रीकृष्ण लाल जी महाराज

ग़ज़ल

शामे ग़म तुम से यह बात रोशन हुई----------

शामे ग़म तुम से यह बात रोशन हुई, सोज़े दिल चाहिए आदमी के लिये
चाँद चमका किया, शमा जलती रही,हम तड़पते रहे, रौशनी के लिये !
एक वो लोग भी ख़ूब क्या लोग हैं,ज़िन्दगी छोड़ दी बन्दगी के लिये,
एक हम भी तो हैं, हाय अफ़सोस है, बन्दगी छोड़ दी,ज़िन्दगी के लिये !
सैकड़ों में चमकते हैं, दो चार बस,वर्ना होता है इन्सां बड़ा ख़ुद गरज़,
इश्क़ करने का सबको सलीक़ा नहीं,ज़ब्ते दिल चाहिये आदमी के लिये !
'शकील' ऐसी तो ज़िल्लत गवाँरा नहीं, भीख से भी हुआ है गुज़ारा कहीं,
उनके घर जाऊँ और हाथ फैलाऊँ मैं,वो भी किस के लिये,ज़िन्दगी के लिये !

शब्दार्थ :- शामे ग़म - दुखमय संध्या / सोज़े दिल - ऐसा दिल जिसमें प्रेम की व्यथा हो / बन्दगी - भजन ख़ुदग़रज़ - स्वार्थी / सलीक़ा - ढंग / जब्ते-दिल -सब्र

==========

ग़ज़ल

समा कर चश्मे- उल्फ़त में, न पूछो मुझसे क्या तुम हो ----------

समा के चश्मे-उल्फ़त में, न पूछो क्या तुम हो !
सनम-खाने में बुत हो और काबे में ख़ुदा तुम हो !!
बहुत फिरते हैं सरगर्दां तुम्हारे ढूँढने वाले !
तुम्हारा तो निशाँ दिल है, मेरे दिल का पता तुम हो !!
ख़ुदा को अक़्ल से पहचाना, तुम को आँख से देखा !
कहूँ तो शर्क़ आयद हो, ख़ुदा ही जाने क्या तुम हो !!
तुम्हें दिल देके दुश्मन कर लिया सारे ज़माने को !
मुहब्बत की बिना में हूँ, अदावत की बिना तुम हो !!
कोई नामो-निशाँ पूछे मेरा, तो यह बता देना !
मैं वो खोई हुई नाचीज़ हूँ, जिसका पता तुम हो !!
रहो तुम ला-मकाँ, पर मैं यहाँ, क्या लुत्फ़ मिलने का !
मज़ा तब हो वहाँ कोई न होवे, मैं हूँ या तुम हो !!

==========

शब्दार्थ :- चश्मे उल्फ़त - प्रेमी नैन / सनमख़ाना - मन्दिर / बुत - मूर्ति / काबा - मुसलमानों का तीर्थ स्थान जहाँ पैग़म्बर हज़रात मौहम्मद साहब की समाधि है / सरगर्दां -खोजी / शर्क़ - पाप / अदावत - दुश्मनी / बिना - कारण /नामो-निशाँ - नाम व पता / नाचीज़ - तुच्छ / ला-मकाँ - जिसका कोई घर न हो /

ग़ज़ल

तुझे क्या तलाश है ऐ बे--ख़बर----------

तुझे क्या तलाश है ऐ बे--ख़बर कि ख़ुदा कहाँ है कहाँ नहीं,
वो हरेक शै में है, जल्वागर कोई जा नहीं कि जहाँ नहीं !
वही आँख में तेरे नूर है, वही दिल में तेरे सरूर है,
वही पास वही दूर है, कहूँ किस तरह कि अयां नहीं !
कभी कहना न उसको न ला-मकाँ कि तहे जमीं वरे आसमाँ,
वही है अयाँ वही है निहाँ, कहाँ इस मकीं का मकाँ नहीं !
वही है मकाँ वही है मकीं, वही है ज़मां, वहीँ है ज़मी,
ये ख़िला नहीं ये मिला नहीं, ये ज़मी नहीं ते ज़मां नहीं !

==========

शब्दार्थ :- जा - स्थान / अयाँ - प्रकट / ला-मकाँ - जिसके रहने की कोई जगह न हो / तहे जमीं वरे आसमाँ - पाताल, आकाश / अयाँ - प्रत्यक्ष / निहाँ - अप्रत्यक्ष / मकीं - मकान में रहने वाला / मकाँ - मकान / ज़मां - ज़माना / ज़मी - पृथ्वी / ख़िला - आकाश / मिला - सृष्टि

ग़ज़ल

बुत में भी तेरा जल्वा यारब नज़र आता है --------

बुत में भी तेरा जल्वा यारब नज़र आता है,
बुतख़ाने के पर्दे में काबा नज़र आता है !
माशूक़ की सूरत में क्या-क्या नज़र आता है,
क़ुदरत नज़र आती, जल्वा नज़र आता है !
माशूक़ के रुतबे को महशर में कोई देखे,
अल्लाह भी मजनू को लैला नज़र आता है !
एक क़तरये मय जब से साक़ी ने चखाया है,
उस रोज़ से हर क़तरा दरिया नज़र आता है !
साक़ी के तस्सबुर में दिल साफ़ हुआ ऐसा,
जब सर को झुकाता हूँ, शीशा नज़र आता है !
ऐ इश्क़ कहीं ले चल, यह दैरो हरम छोड़ें,
इन दोनों मकानों में झगड़ा नज़र आता है !
'बेकस' मेरी आँखों पर वह दस्ते शफ़ा रख दें,
फिर मुझ से ही वो पूछें अब क्या नज़र आता है !

==========

शब्दार्थ - बुत - मूर्ति / जल्वा - दर्शन / या रब -हे ईश्वर / बुतख़ाना - मन्दिर / रुतबा - महानता / महशर -परलोक /एक क़तरये मय - मदिरा की एक बूँद / साक़ी - शराब पिलाने वाला / दरिया - नदी / तसब्बर -ध्यान / दैरो हरम - घरबार / दस्ते शफ़ा -आशीर्वाद का हाथ

ग़ज़ल

नाम तेरा रहे लब पै हरदम मेरे ----------

नाम तेरा रहे लब पै हरदम मेरे,
दिल को तस्कीन हो चैन मिलता रहे !
ये सितारे सहर झिलमिलाते रहें,
तेरा बीमार करबट बदलता रहे !
सामने तुम मेरे आओ तो इस तरह,
मुझको दीदार हो तेरा परदा रहे !
पास चिलमन के यों आप बैठे रहें,
नूर छन-छन के बाहर निकलता रहे !
आओ हम तुम करें मिलके अहदे वफ़ा,
जो न बदले ज़माने की रफ़्तार से !
सुबह बदला करे, शाम बदला करे,
हम न बदलें ज़माना बदलता रहे !
यों अगर मौत आये तो क्या बात है,
मैं समझूँगा इज़हारे उल्फत है ये !
नाम लब पै तेरा, याद दिल में तेरी,
शक्ल आँखों में हो, दम निकलता रहे !

जान जाये भी 'शाहिद ' तो कुछ ग़म नहीं,

आरज़ू है तुम हमारे हो !

है मेरी आपसे रौनक़े ज़िन्दगी,

मत बदलना ज़माना बदलता रहे !

==========

शब्दार्थ :- लब - होंठ / तस्कीन - तस्सली / सहर - भोर, प्रातः / दीदार - दर्शन / चिलमन - परदा / नूर-प्रकाश

अहदे वफ़ा - मैत्री की प्रतिज्ञा / इज़हारे उल्फ़त - प्रेम का प्रदर्शन / आरज़ू - इच्छा / रौनक़े ज़िन्दगी- जीवन की सुन्दरता

==========

संतमत में प्रेम मार्ग को लेते हैं और किसी ऐसे महापुरुष को जिसने आत्मा का साक्षात्कार कर लिया हो, गुरु धारण करते हैं ! इन स्थूल आँखों से जिसे कभी देखा नहीं, बुद्धि जिसे समझती नहीं, जन्म-जन्मान्तर से जिसे स्थूल का ही ध्यान करने की आदत है, वह निर्गुण का ध्यान कैसे करे ? जब तक हम ईश्वर गति पर न पहुँचें, उससे प्रीति कैसे करें ? इसीलिए पहले ऐसे महापुरुष से प्रेम करते हैं जो ईश्वर के दर्शन प्राप्त कर चुका हो और शरीर धारी हो ! 'गुरु' शब्द का अर्थ है, जो अँधेरे से निकालकर रौशनी में ले जाये ! शरीर से वह सांसारिक व्यवहार करता है और आत्मा से वह ईश्वर में लय है ! जिस्म से हम उससे बोल और बातचीत कर सकते हैं ! इस तरह से उससे सत्संग करते हुए और उससे प्रेम करते हुए हम अंधकार से रौशनी की तरफ चलते हैं !

---- परमसंत डॉ. श्रीकृष्ण लाल जी महाराज

ग़ज़ल

तेरे दामने करम का जिसे मिल गया सहारा----------

तेरे दामने करम का जिसे मिल गया सहारा !
हर एक मौज़े तूफाँ ख़ुद बन गयी किनारा !!
यह अदायें-दिल-नवाज़ी कोई मेरे दिल से पूछे !
वहीं आगये मदद को, मैंने जिस जगह पुकारा !!
मेरी लाज रखने वाले, मेरे नाज़ सहने वाले !
तेरा ग़म है दर हक़ीक़त, मुझे ज़िन्दगी से प्यारा !!
मेरी जानो दिल के मालिक, यही दिल की आरज़ू है !
तेरा जलवा रूबरू हो, मैं किया करूँ नज़ारा !!
मेरे पीर की हिमायत, मेरे साथ है तो बस है !
तेरी ठोकरों में मन्ज़िल मुझे हर भॅवर किनारा !!

==========

शब्दार्थ :- दामने करम - कृपा की ओट / मौज़े तूफाँ - भवसागर की थपेड़ / अदाये दिलनवाज़ी - दिल रखने का तरीक़ा / नाज़ - नख़रे / दर हक़ीक़त - वास्तव में / जल्वा रूबरू - दर्शन सामने हो / नज़ारा - दर्शन

हिमायत - संरक्षण / मन्ज़िल - लक्ष्य

ग़ज़ल

तुम्हीं कह दो तुम्हारे दर से दीवाने कहाँ जायें----------

तुम्ही कह दो तुम्हारे दर से दीवाने कहाँ जायें !
यहाँ जब शम्मा रौशन है, तो परवाने कहाँ जायें !!
खिरदमंदों ने वीराने को भी आबाद कर डाला !
बड़ी मुश्किल है दीवानों की, दीवाने कहाँ जायें !!
ख़ुशी से बन्द कर दो मैकदे, मयकश कहाँ जायें !
हमें इतना बता दो, जी को बहलाने कहाँ जायें !!
बजा इरशाद फ़रमाया कि मयनोशी नहीं अच्छी !
मगर यह भी तो फ़रमाओ कि पैमाने कहाँ जायें !!
जनाब-ए-शेख़ जितने पारसा हैं, हम समझते है !
मगर यह हरकसो नाकस से पहिचाने कहाँ जायें !!
हमें दैरो हरम से कुछ अदावत नहीं ए दोस्त !
मगर हर सिम्त रस्ते में हैं मयखाने, कहाँ जायें !!

==========

शब्दार्थ :- दर - द्वार / दीवाने - प्रेमी भक्त / शम्माँ - दीपक / रौशन - प्रकाशित / परवाने - शलभ, पतिंगे / खिरदमंदों - बुद्धिमानों / मैकदे - मदिरालय / मयकश - पीने वाले / बजा - ठीक / इरशाद फ़रमाया - कहा / मयनोशी - शराब पीना / हरकसों नाकस - हरेक व्यक्ति / दैरो हरम -मन्दिर व मस्जिद / अदावत - बैर / सिम्त / ओर, दिशा

ग़ज़ल

तुम्हारी अंजुमन से उठ के दीवाने कहाँ जाते -------

तुम्हारी अंजुमन से उठ के दीवाने कहाँ जाते !
जो वाबस्ता हुए तुमसे वो अफ़साने कहाँ जाते !!
निकल कर दैरो काबा से अगर मिलता न मैखाना !
तो ठुकराये हुए इन्सां, ख़ुदा जाने कहाँ जाते !!
तुम्हारी बेरूख़ी ने लाज रख ली बादा- खोरी की !
तुम आँखों से पिला देते, तो पैमाने कहाँ जाते !!
चलो अच्छा हुआ काम आ गयी दीवानगी अपनी !
वगरना हम ज़माने भर को समझाने कहाँ जाते !!
'क़तील ' अपना मुक़्क़दर आप से बेगाना गर होता !
तो फिर अपने पराये हम से पहचाने कहाँ जाते !!

==========

शब्दार्थ :- अंजुमन - दरबार / वाबस्ता - सम्बन्धित / अफ़साने - संस्मरण / दैरो काबा - मन्दिर मस्जिद /

मैखाना - मदिरालय / इन्सां - आदमी / बेरूख़ी - मुँह मोड़ लेना / बादा खोरी - शराब खोरी / पैमाने - प्याले

दीवानगी - प्रेम की मस्ती / वगरना - अन्यथा / बेगाना - अनिभिज्ञ

ग़ज़ल

अज़ल से दोनों हुस्नो इश्क़ मेरे दिल में रहते हैं ----------

अज़ल से दोनों हुस्नो इश्क़ मेरे दिल में रहते हैं !

बहम लैलाओ मजनू एक ही मन्जिल में रहते हैं !!

ताज्जुब है किसी ने आज तक उनको न पहचाना !

वो होकर बेपरदा हरेक महफ़िल में रहते हैं !!

करें क्योंकर न सिजदा सर झुकाकर अपने सीने को !

कि सीने में हमारे दिल है और वो दिल में रहते हैं !!

मेरे कानों में आहिस्ता कहा पीरे तरीक़त ने !

जिसे तू ढूँढता है वो तो तेरे दिल में रहते हैं !!

शिकायत किस जुबाँ से मैं करूँ उनके न आने की !

यही अहसान क्या कम है कि मेरे दिल में रहते हैं !!

ख़ुदा रक्खे मौहब्बत को किये आबाद दौनों घर !

मैं उनके दिल मैं रहता हूँ, वो मेरे दिल में रहते हैं !!

रहे पीरे मूँगा के पास क्योंकर शेख़े मसनूई !

जो रहते हैं तो कामिल सौह्बते कामिल में रहते हैं !!

==========

शब्दार्थ :- अज़ल - आदि से / हुस्नो इश्क़ - सौन्दर्य और प्रेम / बहम - इकठ्ठे / लैलाओ मजनू - प्रीतम और प्रेमी /मन्ज़िल - घर / पीरे तरीक़त - गुरु / पीरे मुंगा - गुरु / कामिल - पूर्ण

==========

ग़ज़ल

तुझी को जाने -जां दैरो-हरम में जल्वागर देखा----------

तुझी को जाने -जां दैरो-हरम में जल्वागर देखा !

तुही हरजा नज़र आया, जहाँ देखा जिधर देखा !!

ये तेरी आँख है या बादए-वहदत का साग़र है !

हुए बेहोश बेख़ुद जिसको तूने एक नज़र देखा !!

सुना है शेख जी आये काबे से चलो पूछें !

नज़र आया ख़ुदा भी, या ख़ुदा का ख़ाली घर देखा !!

ये आँखें फूट जायें गर किसी को एक नज़र देखें !

तुम्हें देखा करेंगी और तुम्हीं को उम्र भर देखा !!

ज़ियारत की किसी ने दैर की, काबा गया कोई !

हम अपने घर से जब 'औघट' चले सतगुरु का घर देखा !!

==========

शब्दार्थ :- जाने-जॉ - प्रीतम, स्वामी / दैरोहरम - मन्दिर मस्जिद / जल्वागर - व्यापक / हरजा - सर्वत्र /

बादए वहदत - ईश्वर प्रेम की मदिरा / साग़र - प्याला / ज़ियारत - दर्शन / दैर - मस्जिद

ग़ज़ल

रंगे महफ़िल जमा गया कोई --------

रंगे महफ़िल जमा गया कोई,
बात बिगड़ी बना गया कोई !
रस्मे उल्फ़त सिखा गया कोई ,
बज़्मे हस्ती पै छा गया कोई !
बख़ुदा मस्त मस्त आँखों से,
जो न पी थी पिला गया कोई !
दिल की बस्ती उजाड़ सी क्यों है,
क्या यहाँ से चला गया कोई !
ता-क़यामत तक किसी तरह न बुझे,
आग ऐसी लगा गया कोई !
बाद मुद्दत गले लगा के 'ज़ौक़',
हँसते-हँसते रुला गया कोई !

==========

शब्दार्थ :- रंगे महफ़िल - सत्संग का आत्मिक आनंद / रस्मे उल्फ़त -प्रीत की रीति / बज़्मे हस्ती - जीवन / बख़ुदा - ईश्वर की सौगन्ध / ता-क़यामत - प्रलय तक

==========

ग़ज़ल

मेरी ज़िन्दगी के मालिक तेरे ग़म से आशकारा----------

मेरी ज़िन्दगी के मालिक तेरे ग़म से आशकारा !

तेरा ग़म है दर हक़ीक़त मुझे ज़िन्दगी से प्यारा !

कहीं छिप के रह सका है तेरा हुस्न आलम आरा !

कि जहाँ झुकाई गरदन वहीं कर लिया नज़ारा !

मैं इसमें भी सुर्ख़रू हूँ कि है मुहब्बतों की बाज़ी !

तुम हर क़दम पै जीते मैं हर क़दम पै हारा !

मैं बताऊँ तुझको नासह जो फ़र्क मुझ में तुझ में !

मेरी ज़िन्दगी तलातुम तेरी ज़िन्दगी किनारा !

कोई ऐ 'शकील' देखे यह जिनू नहीं तो क्या है !

कि उसके हो गए हम जो हो न सका हमारा !

==========

शब्दार्थ :- ग़म - विरह / आशकारा - भरी हुई / दर हक़ीक़त - वास्तव में / हुस्न - सौन्दर्य / आलम आरा -सर्वव्यापी / नज़ारा - दर्शन / सुर्ख़रू - प्रसन्न / नासह उपदेशक / तलातुम - उफनती नहरें / जिनु - प्रेम में व्याकुलता

==========

ग़ज़ल

जहाँ रक़्स करती है रूहे तमन्ना --------

जहाँ रक़्स करती है रूहे तमन्ना, उसी हद्दे मन्ज़िल को मैं चाहता हूँ !
सलामत रहे तेरा जज़्बे मुहब्बत, तुम्हें ढूँढ़ता हूँ तुम्हें चाहता हूँ !
तेरी याद तसकीने दिल बन गयी है, तेरा ग़म मेरी ज़िन्दगी बन गयी है !
करूँ तुझ पै क़ुरबान हर शादमानी, कि मिट- मिट तुम्हारा हुआ चाहता हूँ !
कहाँ ले के आई है मौजे-मुहब्बत, उभरना यहाँ कुफ्र है आशिक़ी में !
मेरे दिल की यारब दुइ अब मिटा दे ,तुम्हारी क़सम मैं तुम्हें चाहता हूँ !
ये माना अधूरी मेरी साधना है, अधूरी है पूजा, और आराधना है !
बुरा हूँ भला हूँ मगर हूँ तुम्हारा,
यही है सबब जो तुम्हें चाहता हूँ !

==========

शब्दार्थ :- रक़्स - नृत्य / रूहे तमन्ना - आत्मा / हद्दे मन्ज़िल - लक्ष्य की पराकाष्टा / सलामत - सकुशल

जज़्बे मौहब्बत - प्रेम भावना / तसकीने दिल - मन की शांति / ग़म - विरह / क़ुरबान - न्यौछावर

शादमानी - ख़ुशी / मौज़े मौहब्बत - प्रेम की लहर / कुफ्र - पाप / यारब - हे ईश्वर

==========

ग़ज़ल

दुई में तज़करा तौहीद का पाया नहीं जाता ----------

दुई में तज़करा तौहीद का पाया नहीं जाता !

जहाँ तेरी रसाई है मेरा साया नहीं जाता !!

मौहब्बत असल में मख़मूर एक रोज़े हक़ीक़त है !

समझ में आ गया है फिर भी समझाया नहीं जाता !!

मौहब्बत के लिये कुछ ख़ास दिल मख़सूस होते हैं !

ये वो नग़मा है जो हर साज़ पर गया नहीं जाता !!

मौहब्बत की नहीं जाती, मौहब्बत हो ही जाती है !

ये शोला ख़ुद भड़क उठता है, भड़काया नहीं जाता !!

मेरे टूटे हुए पाये-तलब का मुझ पै अहसां है !

कि अब उठकर तेरे दर से कहीं जाया नहीं जाता !!

==========

शब्दार्थ :- दुई - द्वैतपना / तज़करा - वार्तालाप / तौहीद - एकेश्वरवाद / रसाई - पहुँच / साया - परछाई

मख़मूर - भरा हुआ / राज़े हक़ीक़त - सच्चाई (ईश्वर का भेद) / मख़सूस -विशेष / नग़मा - राग / साज़ - बाजा शोला - अंगारा / पाये तलब - टूटे हुए पैर

==========

ग़ज़ल

कौन कहता है तुझे मैंने भुला रखा है ----------

कौन कहता है तुझे मैंने भुला रखा है,
तेरी यादों को कलेजे से लगा रखा है !
तूने जो दिल के अँधेरे में जलाया था कभी ,
वो दिया आज भी सीने में जला रखा है !
लब पै आहें भी नहीं, आँख में आँसू भी नहीं ,
दिल में हर राज़ मुहब्बत का छुपा रखा है !
देख जा आके महकते हुए ज़ख्मों की बहार,
मैंने अब तक तेरे गुलशन को सजा रखा है !

==========

शब्दार्थ :- लब - होंठ / राज़-भेद / गुलशन - बग़ीचा

नूर ही नूर है ताहददे नज़र आज की रात !
न जाने किसने पर्दा रूखे -रौशन से हटा रखा है !!

ग़ज़ल

वो दिल ही नहीं जिस दिल में ,ऐ सांवरिया तेरी याद न हो ! ----------

वो दिल ही नहीं जिस दिल में, ऐ सांवरिया तेरी याद न हो !
वो याद नहीं जिसमें तुझ से, कुछ लुत्फ़ भरी फ़रियाद न हो !
फ़रियाद भी क्या फ़रियाद है वो, हो चाह न जिसमें मिलने की !
वो चाह नहीं जिसमें तेरे, आशिक़ का घर बरबाद न हो !
बरबादी भी वो क्या जिसमें, रुसवा न सरे बाज़ार हुए !
रुसवाई भी वो क्या जिसमें, कुछ जोशे जिनू आबाद न हो !
वो जोशे जिनू भी क्या जिसमें, कुछ बूँद न टपकें आँखों से !
वो बूँद भी क्या जिसमें तेरी, उल्फ़त की लहर ईजाद न हो !

==========

शब्दार्थ :- लुत्फ़ भरी - प्रेम से भरी / फ़रियाद -विनती / रुसवा - बेइज़्ज़त होना / सरे बाज़ार - बीच बाज़ार में

जोशे जिनू - प्रेम का जोश / उल्फ़त - प्रेम / ईजाद - पैदा

ग़ज़ल

सना बशर के लिये है, बशर सना के लिये---------

सना बशर के लिये है, बशर सना के लिये !
तमाम हम्द सज़ावार हैं ख़ुदा के लिये !!
अता के सामने यारब ख़ता का ज़िक्र ही क्या !
कि तू अता के लिये है बशर ख़ता के लिये !!
ये रंग लाई है रहमत तेरी सरे महशर !
कि बे-ख़ता भी तरसने लगे ख़ता के लिये !!
तेरे करम ने वहीं बढ़ के दस्तगीरी की !
गुनाहगारों के जब हाथ उठे दुआ के लिये !!

==========

शब्दार्थ :- सना - ईश्वर की तारीफ़ / बशर - मनुष्य / हम्द - जीवधारी / अता - दात / यारब - परमेश्वर /

ख़ता -क़सूर / रहमत - दया / सरे महशर - कयामत के दिन / बेख़ता - निर्दोष,निष्पाप / ख़ता - पाप

करम - कृपा / दस्तगीरी - हाथ पकड़ना / गुनहगार - पापी

ग़ज़ल

रुख़ से पर्दा उठादे ज़रा साक़िया---------

रुख़ से पर्दा उठादे ज़रा साक़िया,
बस अभी रंगे महफ़िल बदल जायेगा !
जो बेहोश है होश में आयेगा,
गिरने वाला भी गिर के सम्भल जायेगा !
हो मेरे दिल के तुम नाख़ुदा ऐ सनम,
है तुम्हीं से मेरी ज़िन्दगी का भरम !
लाज रख लेना उल्फ़त की तुमको क़सम,
तुम जो बदले ज़माना बदल जायेगा !
तीर को अब न खींचो, कहा मान लो,
जिस्म की जां है दिल, दिल की जां तीर है !
तीर खींचा तो दिल साथ आयेगा,
दिल जो निकला तो दम भी निकल जायेगा !
फूल को इस तरह तोड़ ऐ बागबाँ,
शाख़ हिलने न पाये, न आवाज़ हो !
वरना रौनक़ न गुलशन में आयेगी फिर,
दिल अगर हर कली का दहल जायेगा !

तुम तसल्ली न दो पास बैठे रहो,
वक़्त भी मेरे मरने का टल जायेगा !
पास तुम सा मसीहा जो बैठा रहे,
मौत का भी इरादा बदल जायेगा !
मेरी फ़रियाद से वो तड़प जायेंगे,
मेरे दिल को मलाल इसका होगा मगर !
क्या ये कम है कि वो बेनक़ाब आयेंगे,
मरने वाले का अरमाँ निकल जायेगा !
मेरा दामन तो जल ही चुका है मगर,
आँच आये जो तुम पर गवारा नहीं !
मेरे आंसू न पौंछो ख़ुदा के लिये,
वरना दामन तुम्हारा भी जल जायेगा !
अपना परदे का रखना है गर कुछ भरम,
सामने आना जाना मुनासिब नहीं !
एक वहशी से ये छेड़ अच्छी नहीं,
क्या करोगे अगर दिल मचल जायेगा !

==========

शब्दार्थ :- नाख़ुदा - मल्लाह / सनम - प्रीतम, प्रभु / उल्फ़त -प्रेम / गुलशन - बग़ीचा / मसीहा-इलाज करने वाला / दामन - आँचल / बेनक़ाब - मुँह उघारे

ग़ज़ल

मय छलकती रहे साक़ी तेरे पैमाने से ---------

मय छलकती रहे साक़ी तेरे पैमाने से !

रिन्द बन बन के निकलते रहें मयख़ाने से !!

दिल के आईने में रिसने दे सरूरे-अबदी !

साक़िया आने दे छनती हुई पैमाने से !!

अपने महबूब की आग़ोशे नज़र में छिपकर !

रात दिन रहते हैं क्या बेपिये मस्ताने से !!

शम्मा रू यार से रोशन है हक़ीक़ते जाना !

जां -निसारी का सबक़ मिलता है परवाने से !!

खुल गयी दिल में हक़ीक़त मेरे दो-आलम की !

परतबे जल्वये दीदार के पड़ जाने से

+==========

शब्दार्थ :- मय-मदिरा / साक़ी - शराब पिलाने वाला (गुरु) / पैमाना-प्याला / रिन्द - पीने वाले (जिज्ञासु)

मयखाना - मदिरालय (गुरु दरबार) / सरुरे-अबदी -स्थायी आनन्द / महबूब - प्रीतम / आग़ोशे नज़र - कृपा दृष्टि /शम्मा -दीपक / रू -तरह / यार - प्रीतम / रोशन - प्रकाशित / हक़ीक़ते जाना - ईश्वर का अस्तित्व /

जां -निसारी - बलिदान / परवाना - शलभ / दो-आलम - लोक परलोक / परतब-प्रतिबिम्ब / जल्वये दीदार - अद्भुत दर्शन

ग़ज़ल

कभी ए हक़ीक़ते मुन्तज़िर नज़र आ लिबासे मजाज़ में ----------

कभी ए हक़ीक़ते मुन्तज़िर नज़र आ लिबासे मजाज़ में,
कि हज़ारों सिजदे तड़प रहे हैं तेरी एक जबीने नियाज़ में !
कभी काबा रू जो खड़ा हुआ तो हरम से आने लगी सदा,
तेरा दिल तो है सनम आशना तुझे क्या मिलेगा नमाज़ में !
मेरा सिजदा सहब में पड़ गया इसे मैं क़ज़ा कहूँ या अदा,
तेरी याद ने वो सितम किया कि सताया आकर नमाज़ में !
न कहीं जहाँ में अमां मिली, जो अमां मिली तो कहाँ मिली,
मेरे कारे हाय सियाह को तेरे अफ़ुए बन्दा नवाज़ में !
न बचा-बचा के तू रख इसे तेरा आइना है वो आइना,
जो शकिस्ता हो तो अज़ीज़तर है निगाहे आइना-साज़ में !
तुझे क्या बताऊँ ए हमनशीं मुझे मौत में जो मज़ा मिला,
न मिला मसीहा औ खिज़ू को वो हयात उम्रे दराज़ में !
न वो हुस्न में रहीं शोखियाँ न वो इश्क़ में रहीं गर्मियाँ,
न वो ग़ज़नवी में मज़ाक़ है न वो ख़म है ज़ुल्फ़े अयाज़ में !
कभी पर्दादार है तू राज़ का कभी है तू परदये राज़ में,
मेरी एक हक़ीक़ते मुश्तरिक कि हक़ीक़त और मजाज़ में !

कभी तू भी तालिबे रहम हो कभी तू भी ग़ैरों पर जान दे,
कभी जलवागर हो खुदा करे तेरा राज़ मेरे नियाज़ में !

==========

शब्दार्थ :- हक़ीक़त -परमेश्वर (निराकार) / मुन्तज़िर - इन्तज़ार करने वाला / लिबासे मजाज़ - देहधारी होकर

सिजदा - माथा टेकना / जबीने नियाज़ - दर्शन / काबा- रू - काबे की ओर / हरम - मस्जिद / आशना - प्रेमी

सहब - द्विविधा / कज़ा - मौत / अमां - चैन, शांति / कारे हाय सियाह - पाप / अफवे बन्दा नवाज़ - अधम उधारण प्रभु की शरण में / शाकिस्ता - टूटा हुआ / अज़ीज़तर - ज़्यादा प्यारा / आइना साज़ - शीशा बनाने वाला (ईश्वर) /

हमनशीं - मित्र / हयात - जीवन / उम्र दराज़ - लम्बी आयु / ख़म - बल / ज़ुल्फ़े अयाज़ - बिखरी हुई लटें /

पर्दादार - पर्दा रखने वाला / राज़ - भेद / तालिबे रहम -कृपाकाँक्षी / जल्वाग़र - प्रगट

==========

जब दो तारों में गाँठ लग जाती है तो वे अलग नहीं हो सकते ! उन्हें अलग करने के लिए गाँठ खोलनी पड़ेगी ! इसी तरह मन और आत्मा में गाँठ पड़ गयी है ! जब यह गाँठ छूट जाय तो परमात्मा के दर्शन हों ! अज्ञानता ही यह गाँठ है !

----- परमसंत डॉ. श्रीकृष्ण लाल जी महाराज

ग़ज़ल

दौनों जहाँ के आशिक़ तेरे तुझ पर वारे बैठे हैं ----------

दौनों जहाँ को आशिक़ तेरे तुझ पर वारे बैठे हैं !
मुल्के बक़ा में डाले तेरे सबसे किनारे बैठे हैं !!
बाज़िये दुनियाँ खेल है मुतलक़, हारे दाव लगाकर अहमक़,
जीते वही जो आशिक़ तेरे आपको हारे बैठे हैं !!
नाम तलब का दिल से मेटे, बेग़म हो आराम से लेटे,
जब से हमने हाथ समेटे, पाँव पसारे बैठे हैं !
कुछ तो दे दे अब तो साक़ी, रखा है किस दिन को बाक़ी,
हम भी हैं तेरे मुश्ताक़ी, गोर किनारे बैठे !
काम हमें क्या गोरो क़फ़न से, फ़ारिग हैं सब रंजो महन से,
हस्ती मेटे अपने तन से, क़बा उतारे बैठे हैं !
कोई जाके बहरे ख़ुदा इतना कहे उसे समझा के,
आशिक़ तेरे देख तो आके, आसन मारे बैठे हैं !
मुनक़िर अपना क़िब्र दिखायें, आकर रोज़ मुसीब सुनावें,
हम मज़बूर कहाँ अब जावें, दर पै तुम्हारे बैठे हैं !

==========

ग़ज़ल न. 38 के शब्दार्थ :- दोनों जहाँ - लोक परलोक / मुल्के वफ़ा - सबसे उपराम होकर / बाज़िये दुनियाँ- संसार की बाज़ी / मुतलक़ - केवल / अहमक़ - मूर्ख / तलब - इच्छा / बेग़म - निश्चिंत / मुश्ताक़ी - चाहने वाले / गोर - क़ब्र / गोरो कफ़न -क़ब्र और मुर्दे का कपडा / रंजो महन - दुःख सुख / हस्ती - आपा / मुनकिर नास्तिक / किब्र -अहंकार / दर - द्वार / क़बा - आवरण / बहरे ख़ुदा - ख़ुदा (ईश्वर) के वास्ते !

भक्ति बढ़ाने के लिए सबसे ऊँचा तरीक़ा यह है कि मन के फंदे से बचें और ईश्वर से नाराज़ न हों ! ज़रा गर्मी हो जाय तो कहने लगते हैं - 'हाय, बड़ी तपन है !" कभी बारिश ज़्यादा हो गयी तो लगे परमात्मा को कोसने ! यह सब बुरी बातें हैं ! परमात्मा के सब काम सर्वहित के लिए होते हैं ! वह जो करता है, सबकी अच्छाई के लिए ही करता है ! लेकिन उसके कामों को अपने मन की कसौटी पर परखते हैं ! जिस हाल में वह रखे उसी में खुश रहो ! उफ़ भी न करो ! कोई ख्वाहिश न उठाओ ! 'शुक्र' वही है कि अगर तक़लीफ़ भी हो रही है तो उसकी सराहना करो ! हर समय राज़ी -ब-रजा रहो !

------- परमसंत डॉ. श्रीकृष्ण लाल जी महाराज

ग़ज़ल

खैंची है तसव्वुर में तस्वीरे हमागोशी ----------

खेंची है तसव्वुर में तस्वीरे हमागोशी !
अब होश न आने दे मुझ को मेरी बेहोशी !!
मैं साज़े हक़ीक़त हूँ दम साज़े हक़ीक़त हूँ !
ख़ामोशी है गोयायी, गोयायी है ख़ामशी !!
उस दर्दे मोहब्बत का इज़हार है नामुमकिन !
टूटा है न टूटेगा कुफ्ले दरे ख़ामोशी !!
हाँ हाँ मेरी इसियाँ का पर्दा नहीं खुलने का !
हाँ हाँ तेरी रहमत का है काम ख़तापोशी !!
इस पर्दे में पोशादी लैलाये दो-आलम है !
बे वजह नहीं 'बेदम ' काबे की सियाहपोशी !!

==========

शब्दार्थ :- तसब्बुर - ध्यान / हमागोशी - मिलन / साज़ - बाजा / हक़ीक़त - सत्य (ईश्वर) गोयायी - बातचीत करना /इज़हार - दिखाना / क़ुफ़्ल - ताला / दर - दरवाज़ा / इसियाँ - पाप / ख़तापोशी- दोषों को क्षमा करना /पोशीदा - छिपा हुआ / लैला - प्रियतम / दो-आलम - लोक परलोक / सियाह पोशी- काला पर्दा

ग़ज़ल

लगता नहीं है दिल मेरा उजड़े दियार में ----------

लगता नहीं है दिल मेरा उजड़े दियार में,
किसकी बनी है आलमे-नापायेदार में !!
कह दो इन हसरतों से कहीं और जा बसें,
इतनी जगह कहाँ है दिले-दाग़दार में !!
इस शाख़ें गुल पै बैठ के बुल-बुल है शादमाँ,
कांटे बिछा दिये हैं दिले-लालाज़ार में !!
उम्रे दराज़ मांगकर लाये थे चार दिन,
दो आरज़ू में कट गये दो इन्तिज़ार में !!
है कितना बदनसीब 'ज़फर' दफ़न के लिये,
दो गज़ ज़मीन भी न मिली कूए-यार में !!

==========

शब्दार्थ :- दियार - देश, बस्ती / आलमे-नापायेदार - नश्वर संसार / हसरतें - इच्छायें / दिले दाग़दार - छलनी हुआ दिल / शाख़ें गुल - फूल वाली टहनी / शादमाँ - खुश / दिले लालाज़ार - हरा भरा दिल / उम्रे दराज़ - लम्बी आयु / कूए यार - प्रीतम की गली)

ग़ज़ल

ये न थी हमारी क़िस्मत कि विसाले यार होता ----------

ये न थी हमारी क़िस्मत कि विसाले यार होता !
अगर और जीते रहते यही इन्तिज़ार होता !!
तेरे वादे पै जिये हम तो यह जान छूट जाना !
कि ख़ुशी से मर न जाते अगर एतवार होता !!
कोई मेरे दिल से पूछे तेरे तीरे नीमकश को,
ये ख़लिश कहाँ से होती जो जिगर के पार होता !!
ये कहाँ की दोस्ती है कि बने हैं दोस्त नासेह !
कोई चरासाज़ होता कोई ग़मगुसार होता !!
कहूँ किससे मैं कि क्या है, शबे ग़म बुरी बला है !
मुझे क्या बुरा था मरना, अगर एक बार होता !!
ये मसाइले तसव्वुफ़, तेरा ये बयान 'ग़ालिब '!
तुझे हम वली समझते, जो न वादाख्वार होता !!

==========

शब्दार्थ :- विसाले यार - प्रीतम का मिलना / तीरे नमकश - तिरछी नज़र / ख़लिश - चुभन / नासेह - नसीहत करने वाला (गुरु) / चारासाज़ - प्रबन्ध करने वाला / ग़मगुसार - दुःख बाटने वाला / शबे ग़म - ग़म की रात // मसाइले तसव्वुफ़ - एकान्त चिन्तन वली - सिद्ध / वादाख्वार - शराबी

==========

ग़ज़ल

शिकायत क्या है, लबों पर आह भी लाया नहीं करते----------

शिकायत क्या है, लबों पर आह भी लाया नहीं करते !
मुहब्बत करने वाले ग़म से घबराया नहीं करते !!
हरम हो, दैर हो, कुछ भी हो, लेकिन यह हक़ीक़त है !
ख़ुलूस-ए दिल के सिजदे रायगाँ जाया नहीं करते !!
हुज़ू में रहमते मुजरिम-नवाज़ आजा, इधर आजा !
ये हम हैं जो खतायें करके पछताया नहीं करते !!
'जिगर' मौक़ा मिले तो क्या मिले अर्ज़े मुहब्बत का !
हम उनको पा के अपने आप को पाया नहीं करते !!

==========

शब्दार्थ :- लबों - होंठों / ग़म -तकलीफ़ / हरम -मन्दिर / दैर - काबा / हक़ीक़त - सत्य / ख़ुलूसे दिल - सच्चे हृदय से / सिजदे - सिर झुकाना / रायगां - निर्थक / हुज़ूमें रहमते मुजरिम नवाज़ -कृपा सागर पतित उधारण / ख़ताएँ - पाप / अर्ज़े मुहब्बत - प्रेम दर्शना

==========

ख़्याल से ही हम भ्रान्ति में फंसे है और ख़्याल से ही छूटेंगे ! यह सारी दुनियाँ ख़्याल से ही बनी है और ख़्याल से ही छूटेगी ! इसलिए सतगुरु का ख़्याल बाँधकर इन सभी साँसारिक वासनाओं तथा भोगों को काटते जाओ ! यही सबसे नज़दीक रास्ता ईश्वर को पाने का है !

------ परमसंत डॉ. श्रीकृष्ण लाल जी महाराज

विनती

इक चश्मे इनायत का बन्दा भी सवाली है ----------

इक चश्मे इनायत का, बन्दा भी सवाली है !

ऐ रहमो करम वाले, दामन मेरा ख़ाली है !!

जिस दिन से नज़र तूने, गुलशन से हटा ली है !

उस रोज़ से फूलों में, खुशबू है न लाली है !

परदे में तबस्सुम के, हर चोट छुपा ली है !

दीवानों ने जीने की, क्या राह निकाली है !

गुलशन के निगाहबां उठ, गुलशन की हिफाज़त कर !

दीवानों ने अब अपनी, ज़न्जीर संभाली है !

हर शाम चिराग़ाँ है, पल्कों की मुँडेरों पर !

अश्क़ों की नवाज़िश है, हर रात दिवाली है !

दुनियां के ख़ज़ानों में, मिलने की नहीं यारो !

हमने लबे-जानां से, इक चीज़ चुरा ली है !

क्या जाने 'फ़ना ' उनको कब मय की ज़रूरत हो !

बारिश के लिए हमने, थोड़ी सी बचा ली है !!

==========

शब्दार्थ - चश्मे इनायत - दया दृष्टि / सवाली - याचक / गुलशन -बगीचा / तबस्सुम -मुस्कराना / निगहबाँ -सरंक्षक

चिराग़ाँ - जगमग / अश्क़ों -आंसुओं / नवाज़िश -कृपा / लबे जाना -प्रीतम के होंठ / मय-शराब

==========

ग़ज़ल

ख़ामोश है गर तस्बीरे सनम ----------

ख़ामोश है गर तस्बीरे सनम,
तो दैर का नक़्शा कुछ भी नहीं !
जब यार है पैशे नज़र हरदम,
तो काबे का जल्वा कुछ भी नहीं !
साबित है शमा के जलने से,
परवाने के क़ुर्बा होने से !
गर दिल को अता कर दे तू असर ,
तो हस्ती का पर्दा कुछ भी नहीं !
पहले तो छिपाया परदों में,
फिर खो दिया अपने जल्वों में !
जब मैं न रहा तो हँस के कहा,
अब बीच में पर्दा कुछ भी नहीं !
पीने को मिले जब नज़रों से,
सिजदे पै सिजदा कौन करे !
ये आयना हैरत है 'बेदम ',वह सब कुछ है तू कुछ भी नहीं !!

==========

शब्दार्थ :- गर - अगर/तस्बीरे सनम - प्रीतम का चित्र/दैर - काबा/यार - प्रीतम (गुरु)/पेशे नज़र-सामने/हस्ती -व्यक्तित्व/जल्वों -विविध दृश्य/सिजदा -सिर झुकाना/आइना हैरत -विचित्र दर्पण

ग़ज़ल

बहुत ढूँढा न पाया आसमानों में ज़मीनों में ----------

बहुत ढूँढा न पाया आसमानों में ज़मीनों में !
वो निकले मेरे जुलमत-ख़ानाये दिल के मकीनों में !! (1)
मैं तारीकी हूँ लेकिन मुझमें पोशीदा वो गौहर है !
अयाँ जिसकी झलक है, ऐ फ़लक़ तेरे नगीनों में !! (2)
तमन्ना दर्दे-दिल की हो तो कर ख़िदमत फ़क़ीरों की !
नहीं मिलता है ये गौहर बादशाहों के ख़ज़ीनों में !! (3)
मुहब्बत के लिए दिल ढूँढ़ कोई टूटने वाला !
ये वो मय है जिसे रखते हैं नाज़ुक आबगीनों में !! (4)
न ढूँढ इस खिर्क़ा पोशी में इरादत हो तो देख उनको !
यदे बैज़ा लिए बैठे हैं जो अपनी आस्तीनों में !! (5)
ख़ामोश ऐ दिल भरी महफ़िल में चिल्लाना नहीं अच्छा !
अदब पहला क़रीना है मुहब्बत के क़रीनों में !! (6)

==========

शब्दार्थ :-आसमानों में ज़मीनों में - आकाश व पृथ्वी में / जुलमत-ख़ानाये दिल के मकीनों - ह्रदय की अँधेरी कोठरी /तारीक़ी - अंधकार / पोशीदा - छिपा हुआ / गौहर - चमकदार मोती / अयाँ - मौज़ूद है / फ़लक़ - आकाश /नगीने - सूर्य, चन्द्रमा, तारागण / तमन्ना - अभिलाषा / ख़िदमत -सेवा / ख़ज़ीनों - ख़ज़ानों / मय - प्रेम की मदिरा /नाज़ुक आबगीनों - कोमल सुराहियों / खिर्का पोशी - बाहरी वेश-भूषा (आडम्बर) / इरादत -इरादा, अभिलाषा /यदे बैज़ा - हथेली में एक प्रकार का आशीर्वाद सूचक निशान अथवा दुआ देने की शक्ति (हज़रत मूसा के हाथ में हथेली में एक गोल अण्डाकार चिन्ह था जिसे यदि वे किसी के सिर पर रख देते थे तो उसका कष्ट निवारण हो जाता था ! उसी का नाम यदे बैज़ा है)/ खामोश - शांत / अदब - आदर / क़रीना - नियम)

ग़ज़ल

बना बना के तमन्ना मिटाई जाती है ----------

बना बना के तमन्ना मिटाई जाती है,
तरह तरह से वफ़ा आज़माई जाती है !
जब उनको मेरी मौहब्बत का एतवार नहीं,
तो फिर नज़र से नज़र क्यों मिलाई जाती हैं !
'शकील ' दूरिये-मन्ज़िल से ना-उम्मीद न हो,
अब आई जाती है मन्ज़िल अब आई जाती है !

==========

शब्दार्थ :- तमन्ना - अभिलाषा / वफ़ा - स्वामीभक्ति / दूरिये-मन्ज़िल - लक्ष्य का दूर होना

==========

प्रार्थना

श्री जगदीश वृन्दाबन बिहारी,

श्री राधारमण माधव मुरारी !

श्री गोविन्द राधाकृष्ण गोपाल,

मदन-मोहन श्री घनश्याम नन्दलाल !

श्री मुरली मनोहर श्याम सुन्दर,

श्री भगवान गोपीनाथ गिरधर !

श्री यदुपति श्री बाँके बिहारी,

चतुर्भुज श्याम-मूरत चक्रधारी !

श्री जगदातमा माधव विधाता,

दयालु दीनबन्धु छबीलेलाल मोहन !

कन्हैया नन्दनन्दन नन्द प्यारे,

दिलारामें-जहाँ दशरथ दुलारे !

तुही है हुस्न-रुख़्सारे हक़ीक़त,

तुही है पर्दा-बरदारे-हक़ीक़त !

==========

शब्दार्थ :- दिलारामे जहाँ - संसार के चित्त को सुख देने वाले

रुख़सारे हक़ीक़त - सत्य के मुख का सौन्दर्य

परदा बरदारे हक़ीक़त - सत्य का रहस्य खोलने वाले

==========

तुही है काशफ़े असरारे अजली,

तुही है रूनुमाये हुस्ने अबदी !

तुही है जलबा फ़रमाये दो-आलम,

तुही है ख़ुद तमाशाये-दो-आलम !

तुही लौहे तिलिस्मे जानो-जन है,

तुही बख़्शन्दये रूहो-बदन है !

तुही वहशत फ़ज़ाये इश्क़े रुसवा,

तुही नक्शो-निगारे-हुस्न ज़ेबा !

तुही है मूजिदे ईज़ादे कौनेन,

तुही है बानिये बुनियादे कौनेन !

==========

शब्दार्थ : काशफ़े असरारे - भेद खोलने वाला

अजली- आदिम

रूनुमाये हुस्ने अबदी - अनादि सौन्दर्य के रूप को प्रकट करने वाला

जलबा फ़रमाये दो-आलम - दोनों लोकों को प्रकाशित करने वाला

तमाशाये-दो-आलम - दोनों लोकों का तमाशा

लौहे तिलिस्मे जानो-जन - प्राण और शरीर के रहस्यों का उद्घाटन करने वाली जादू की तख़्ती

बख़्शन्दये रूहो-बदन - शरीर व आत्मा का देने वाला

वहशत फ़ज़ाये इश्क़े रुसवा - प्रेम की मस्ती और बदनामी देने वाला

नक्शो-निगारे-हुस्न ज़ेबा - सर्वोत्तम सौन्दर्य का श्रँगार

मूजिदे ईज़ादे कौनेन - दोनों लोकों का आविष्कारक

बानिये बुनियादे कौनेन दोनों लोकों की नींव रखने वाला

==========

तूही है इश्क़े अज़ली हुस्ने जावेद,

तुही है बज्मे तौहीद !

तूही है रौनक़े गरमिये-बाज़ार,

तुही ख़ुद जिन्स तुही ख़ुद खरीदार !

तूही है नग़मए बुकबुल चमन में,

तुहि गुंचा तुही है गुल चमन में !

तूही परवाना तूही शम्मा महफ़िल में !

तुहि गुलबन तुही शोरे अनादिल !

इश्क़े अज़ली - आदिम प्रेम

हुस्ने जावेद - नित्य सौन्दर्य

खिलवते दिल - हृदय को शांति देने वाला

बज्मे तौहीद - अद्वैत की महफ़िल

रौनक़े गरमिये-बाज़ार - संसार के बाज़ार की चहल पहल की शोभा

जिन्स - वस्तु

खरीदार - खरीदने वाला

नगमए बुलबुल - बुलबुल का गीत

चमन - उपवन

गुंचा - कली

गुल - फूल

परवाना - पतंगा, शलभ

गुलबन - फूलों की क्यारी

शोरे अनादिल - बुलबुलों का कलरव

तुही सीता तुही लक्ष्मण तुही राम,

तुही गोपी तुही राधा तुही श्याम !

ज़मीनों-चर्खों महरोमाह तेरे,

दो आलम हैं तमाशगाह तेरे !

फ़ना तर्ज़े ख़िरामे नाज़ की आन,

बक़ा इक लब की तेरे मन्द मुस्कान !

बुत चितचोर माखन के लुटेरे,

हयाती मौत दोनों खेल तेरे !

मिलाये तूने हस्तो नेस्त बाहम,

घरोंदा तेरा बाज़ीगाहे आलम !

ज़बाने सब्ज़ा नाक़िस है सना में,

कि है सरगर्म हर ज़र्रा हवा में !

==========

ज़मीनों-चर्खों महरोमाह - पृथ्वी, आकाश, सूर्य व चन्द्रमा / तमाशगाह - नाटक घर / फ़ना - लय

नाज़ की आन - नख़रे की शोभा / बक़ा - परमेश्वर में लय

लब - होंठ / बुते चितचोर - चित्त को चुराने वाली मूर्ति /हयातो-मौत - जीवन और मृत्यु

हस्तोनेस्त बाहम - अस्तित्व और अभाव (सत और असत) को परस्पर (मिलाना)

बाज़ीगाहे आलम - संसार रूपी खेल का स्थान

ज़बाने सब्ज़ा - बनस्पति की मूक वाणी

नाक़िस है सना में - गुणगान करने में असमर्थ है

सरगर्म - उत्साह से पूर्ण

नमूने आफ़रीनश है तुझी से,

वजूदे आफ़रीनश है तुझी से !

तुही ख़ल्लाक़ है कोनो मकाँ का,

तुही रज़्ज़ाक है हर उन्सोजां का !

अलग कब तुझ से तेरी गुफ़्तगू है,

गरज़ एक तू ही तू है तू ही तू है !

तुही है सबसे बरतर सबसे बाला,

तुही है हाले इसियाँ सुनने वाला !

अधम बिगड़े हुए लाखों सँवारे,

मेरी भी टेर सुन ले प्राण प्यारे !

शहनशाहे-जहाँ आलम-पनाहे,

बराये ख़ुद सूए शौला निगाहे !!

==========

नमूने आफ़रीनश- सृष्टि का उदय (विकास)

वजूदे आफ़रीनश - सृष्टि की स्थिति

ख़ल्लाक़ – रचियता / कोनो मकाँ - दुनियाँ रूपी घर

रज़्ज़ाक - रोज़ी देने वाला /उन्सोजां - प्राणी मात्र

गुफ़्तगू - चर्चा / ग़रज़ - सारांश यह है

सबसे बरतर सबसे बाला - श्रेष्टतम व उच्चतम

इसियाँ - पाप / आलम पनाहे - संसार को शरण देने वाला

बराये ख़ुद – अपने ही लिए

सूए शौला निगाहे -शौला (कवि) की ओर कृपा दृष्टि कीजिये

==========

अर्ज़दाश्त

अजब है कुछ मेरी हालत का इज़हार,
सरासर हूँ अधम पापी गुनहगार !
न क़ाबिल अपनी अरज़े मुद्दआ के,
न लायक़ इल्तमासो इल्तज़ा के !
निदामत नामाये एमाल से है,
खिज़ालत आप अपने हाल से है !
निकम्मा हूँ निकम्मी ज़िन्दगी है,
मेरी हस्ती को ख़ुद शरमिन्दगी है !
न उक़बा का न दुनियाँ का न दीं का,
अजब कुछ हूँ नहीं लेकिन कहीं का !
न ज़िक़रे हक़ है ना फ़िक़रे अमल है,
न कर्मो धर्म ना विद्या का बल है !

==========

शब्दार्थ :- इज़हार - वर्णन / सरासर - बिलकुल / अरज़े मुद्दआ - अपना आशय निवेदन करना /

इल्तमासो इल्तज़ा/ विनम्रता पूर्वक निवेदन / निदामत -लज्जित होना / नामाये एमाल - कर्मों का चिट्ठा /

खिज़ालत - झुंझलाहट / हस्ती-व्यक्तित्व / उक़बा - परलोक / दीं - दीन (परलोक) / ज़िक़रे हक़- भगवत स्मरण / फ़िकरे अमल - उपासना (भक्ति) की चिन्ता / कर्मो धर्म - कर्म व धर्म

असीरे बन्द दुनियाँ हूँ सरासर,
गिरफ़्तारे क़फ़स बेबाल बे-पर !
वो नंगे इख्तलाफ़े आबोगिल हूँ,
कि रब्ते जिस्मो जां से मुनफज़ल !
वो आवारा वतन जिसने न देखा,
वो बुलबुल हूँ चमन जिसने न देखा !
अलग हूँ दूर हूँ सब से जुदा हूँ,
अजब बेकस हूँ बे बेगौर नवा हूँ !
न कोई छोड़ जाने की निशानी,
न कोई यादगारे ज़िन्दगानी !
हज़ारों हैं गुनाहों की गवाही,
सफ़ेदी पर है क्या-क्या रूसियाही !
न जोगी हूँ न सन्यासी जती हूँ,
न रिन्दे बादाकश ने मुन्तक़ी हूँ !

==========

शब्दार्थ :- असीरे बन्द दुनियाँ - संसार में लिप्त / गिरफ़्तारे क़फ़स -संसार रूपी पिंजरे में क़ैद /

बबाल बेपर - बिना पंख / इख्तलाफ़ - विरोधी, विपरीत / आबोगिल - पानी व मिट्टी / रब्ते जिस्मो जां -शरीर व आत्मा का सम्बन्ध / मुनफज़ल -अनिभिज्ञ / वतन - स्वदेश / बेकस - निर्बल / गुनाह -पाप / रूसियाही -कालौंच

रिन्दे बादाकश - शराब पीने वाला / ने - न / मुन्तक़ी -वाचक ज्ञानी

न साधू हूँ न वैरागी न अवधूत,
न लाहूती न जबरूती न मलकूत !
न ज़ाहिद हूँ न अहले करामात,
न आबिद हूँ न हूँ मस्ते ख़राबात !
मेरी ग़फ़लत की हद कुछ भी नहीं,
ख़याले नेको-बद कुछ भी नहीं !
कहाँ दरबार में आने के क़ाबिल,
नहीं हूँ मुँह भी दिखलाने के क़ाबिल !
नहीं छूने के क़ाबिल जिस्म नापाक,
मिलेगी किस तरह से ख़ाक में ख़ाक !
गरज़ जो कुछ भी हूँ सब तुझ को खबर है,
मेरा अंजाम क्या मद्देनज़र है !
हमेशा है गुनहगारों पै रहमत,
हमेशा है तेरी बखिशश की आदत

==========

शब्दार्थ :- लाहूती न जबरूती न मलकूत - परलोकों के नाम / ज़ाहिद -वास्तव में / अहले करामात - चमत्कार दिखाने वाला / आबिद-भक्त/ मस्ते ख़राबात - बुराइयों में मस्त / नेको-बद -अच्छा, बुरा / जिस्म-शरीर/ नापाक -अपवित्र

ख़ाक - भस्म / अंजाम -अंत समय / मद्देनज़र - दृष्टि में रखना / गुनहगार - पापी / रहमत- कृपा / बखिशश-क्षमा करना

किया दुश्मन का भी उद्धार तूने,
उतारा डूबतों को पार तूने !
दयालु दीन बन्धु के सहारे,
थका बैठा हूँ मैं मन्ज़िल किनारे !
नहीं एक वक़्त का तोशा बग़ल में,
झुका पड़ता है सर फ़िकरे अमल में !
कुढब रास्ता है और मन्ज़िल कड़ी है,
जो गठरी सर पै बोझिल बड़ी है !
न रहबर कोई राहे पुर ख़तर में,
अँधेरा होगा हर जानिब नज़र में !
न पस्ती औ बुलन्दी का ठिकाना,
हज़ारों क़ाफ़िले गो हैं रवाना !
बुरा है वक़्त वो जिसका कि डर है,
समां ये है कि जो पेशे नज़र है !
दमे आख़िर रवाँ आँखों में होगा,
किसी दिन यह समां आँखों में होगा !

==========

शब्दार्थ :- मन्ज़िल - लक्ष्य / तोशा - सामान / फ़िक़रे अमल - उपासना की चिंता / मन्ज़िल कड़ी - दुर्गम पथ / रहबर - पथ प्रदर्शक / राहे पुरख़तर - ज़ोखिम भरी राह / हर जानिब - चारों ओर (सब तरफ) /पस्ती औ बुलन्दी -उतार चढ़ाव / क़ाफ़िले - राहगीरों का झुण्ड / रवाना - चल रहे / समां - दृश्य / पेशे नज़र - दृष्टि के सामने / जानिब - ओर / दमे आख़िर - अंत समय

बदलती हों मौहब्बत की निगाहें,
हरेक जानिब हों हसरत की निगाहें !
दमें आख़िर हो घर वालों ने घेरा,
खड़ा हो सब लड़ा लदा असबाब मेरा !
हजुमे अहले मातम हों सिरहाने,
अज़ीज़ो अकरुबा खेशो यगाने !
हरेक की हों निगाहें हसरत आलूद,
खड़ी हों बेकसी बालीं पै मौजूद !
अजब मायूस हो नाकाम दुनियाँ,
तपाँ हों दम असीरे दाम दुनियाँ !
किसी को एक दो दम की इंतज़ारी,
किसी के दिल में हो फ़िक़रे सवारी !
मेरे हर काम बाहम बट रहे हों,
उठाने वाले भाई बट रहे हों !

==========

शब्दार्थ :- असबाब - सामान / हजूम - भीड़ / अहले मातम - शोक मनाने वाले / अज़ीज़ - कुटुम्बी / अक्रोबा-सगे /खेशो यगाने - अपने पराये / हसरत आलूद - हसरत से भरी हुई / बेकसी - निस्साहस होना / बालीं - सिराहने /नाकाम - असफल / तपाँ दुनियाँ - संसार के जंजाल में कैद रहकर जलना / फ़िक़रे सवारी - टिकटी पर ले जाने की चिन्ता / बाहम - इकठ्ठे

गरज़ सामाने रुख़सत जब हो तैयार,
पड़े जां और अज़ल में आके तकरार !
उसे ताज़ील हो हुक्मे क़ज़ा की,
इसे हो ढील अर्ज़े मुद्दआ की !
वो बिखरी हो कि आगे घर के निकलूं,
ये मचली हो कि दरशन करके निकलूं !
पड़ा झगड़ा हो कुछ आपस में भारी,
वो क्या बस एक तुम्हारी इन्तज़ारी !
नज़र आ जाय छबि बांकी अदा की,
मूंदें आँखें तो हो झाँकी अदा की !
तसब्बुर रिश्तए जां में जकड लूँ,
छुटे तब नब्ज़ जब दामन पकड़ लूँ !
जब आये आँखों में दम प्राण प्यारे,
लगा हो ध्यान चरणों में तुम्हारे !

==========

शब्दार्थ :- सामाने रुख़सत - शब् को ले जाने का सामान / जां - जान / अज़ल - मृत्यु / तकरार - झगड़ा /

ताज़ील - जल्दी / हुक्मे क़ज़ा - मौत की आज्ञा / रिश्तए - सम्बन्ध-रिश्ता / जां - जान (आत्मा) / दामन - पल्ला

==========

ग़ज़ल

मुहब्बत की मन्ज़िल पै ओ जाने वाले ---------(2)

मुहब्बत की मन्ज़िल के क़ाबिल तो हो जा !

ख़ुद आ जायेगी तेरे क़दमों में मन्ज़िल !

मगर पहले गुम-करदा मन्ज़िल तो हो जा !

नहीं लब कुशाई की तुझ को ज़रूरत !

हो चेहरे से ज़ाहिर तेरे दिल की हालत !

तुझे ख़ुद भीख देगी उनकी मुहब्बत !

ज़रा उनके दर का तू सायल तो हो जा !

अभी है कहाँ बहरे उल्फ़त का साहिल !

अभी तो अँधेरे में है दूर मन्ज़िल !

नज़र आयेंगे जल्वये हुस्ने जाना !

मगर उनकी महफ़िल के क़ाबिल तो हो जा !

तू बेकार बातों में उलझा हुआ है !

मिले क्या निशाँ उसका भटका हुआ है !

जो रास्ता है मिलने का भूला हुआ है!किसी की मुहब्बत का क़ायल तो हो जा!

==========

शब्दार्थ :- गुम करदा - लय हो जाना / लब कुशाई - मुँह खोलना / सायल - भिखारी / बहरे उल्फ़त - प्रेम का सागर /साहिल - किनारा / जल्वये हुस्ने जाना - प्रीतम के सौन्दर्य का दर्शन

ग़ज़ल

न ख़याले दीनो- ईमाँ, न ख़याले बन्दगी है ----------

न ख़याले दीनो- ईमाँ, न ख़याले बन्दगी है !
तुझे भूलकर के जीना, ये कैसी ज़िन्दगी है !!
तेरे दर पै सिजदे करना, तुझे याद करके रोना !
यही है नमाज़ मेरी, ये ही मेरी बन्दगी है !
तू हज़ार बार ठुकरा, मेरा सर यहीं झुकेगा !
तेरे दर पै सिजदा करना, मेरा फर्ज़े बन्दगी है !!
ये माना पुरखता हूँ, पर हूँ तो तेरा बन्दा !
गर तू मुझे निभा ले, तेरी बन्दा-परवरी है !!
न अलम मेरा अलम है, न ख़ुशी मेरी ख़ुशी है !
जिस हाल में तू रक्खे, तेरी बन्दा -परवरी है !!
तू निगहि रूहे परवर, तू बहारे आशिक़ी है !
तेरा देखना इबादत, तेरी याद ज़िन्दगी है !!

शब्दार्थ :- दीनो- ईमाँ - परलोक व धर्म / सिजदा - सर झुकाना / फर्ज़े बन्दगी - पूजा का धर्म / पुरख़ता -कसूरवार /

बन्दा परवरी - भक्त वत्सलता / अलम -ग़म, दुःख / रूहे परवर - आत्मा को ज्योति प्रदान करने वाले / इबादत -पूजा

ग़ज़ल

हर शै में तजल्ली है पैदा, हर शै में नज़ारे होते हैं ----------

हर शै में तजल्ली है पैदा, हर शै में नज़ारे होते हैं !

जिस सिम्त निगाहें उठती है, दीदार तुम्हारे होते हैं !

तुम पेशे नज़र रहते हो, मेरे बेदारी में या ख्वावों में !

इस तरह समाये हो मुझ में , हर वक्त नज़ारे होते हैं !

दुनियाँ की हर शै बरहम थी, ख़ुद दिल भी हमारा बरहम था !

तुम हमको मिले तक़दीर खुली, अब गैर हमारे होते हैं !

तुम छिपते हो तो छिपते रहो, हम देख ही लेते हैं तुमको !

अल्लाह तसव्वर को रखे, हर वक्त नज़ारे होते हैं !

है मौतों-हयात का इक आलम, इन प्यारी-प्यारी आँखों में !

मरने का तक़ाज़ा होता है, जीने के इशारे होते हैं !

नासह यह तेरे बस की नहीं, तू लुत्फ़े ख़लिश को क्या जाने !

वो दर्द की लज़्ज़त जानते हैं, जो दर्द के मारे होते हैं !

==========

शब्दार्थ :- चीज़ - वस्तु / तजल्ली -प्रकाश / नज़ारे - दर्शन / सिम्त - दिशा / दीदार- दर्शन / पेशेनज़र - आँखों के सामने / बेदारी - जागते में / बरहम - बिखरी हुई / तसब्बर - ख़्याल,ध्यान / मौतों-हयात - मरना जीना /

आलम - दृश्य / नासह - नसीहत देने वाला / लुत्फ़े ख़लिश - चुभन का आनंद / लज़्ज़त - स्वाद

==========

ग़ज़ल

मरने की दुआयें क्यों माँगें, जीने की तमन्ना कौन करे ----------

मरने की दुआयें क्यों माँगें, जीने की तमन्ना कौन करे !
ये दुनियाँ हो या वो दुनियाँ, अब ख़्वाहिशें दुनियाँ कौन करे !
जब किश्ती साबितो-सालिम थी, साहिल की तमन्ना कौन करे !
अब ऐसी शिकिस्ता किश्ती पर, साहिल की तमन्ना कौन करे !
जो आग लगाई थी तुमने, उसको तो बुझाया अश्कों ने !
जो अश्कों ने भड़काई है, उस आग को ठंडा कौन करे !
दुनियाँ ने हमें छोड़ा, 'जज्बी' हम छोड़ न दें क्यों दुनिया को !
दुनियाँ को समझ कर बैठे हैं, अब दुनियाँ दुनियाँ कौन करे !

==========

शब्दार्थ :- तमन्ना - इच्छा / साबितो- सालिम -- साबित / साहिल-किनारा / शिकिस्ता - टूटी हुई - अश्कों - आँसुओं

==========

प्रेम चाहे किसी दुनियाँदार से हो या ईश्वर से, उसमें कोई गरज़ नहीं होनी चाहिए ! जहाँ गरज़ होती है, उसे प्रेम नहीं कहते ! यह सौदेबाज़ी है ! गुरु से प्रेम करो और कुछ न चाहो ! अपने मन से पूछो कि क्या चाहते हो और जबाब मिले कि कुछ नहीं चाहते, हमारा प्रीतम ख़ुश रहे, बस यही चाहते हैं ! हमारा रास्ता प्रेम का रास्ता है ! प्रेम में जहाँ गरज़ शामिल होती है, वहीं रास्ता बंद हो जाता है !

------ परमसंत डॉ. श्रीकृष्ण लाल जी महाराज

ग़ज़ल

दम लब पै ज़ुबाँ पर नामों का तराना ----------

दम लब पै ज़ुबाँ पर नामों का तराना !
क़ासिद तू उनसे कहना, यूँ मेरा फ़साना !!
मर्ज़ी न हो जो प्यार की, ठुकरायें तो सही !
इक बार करम हाल पै, फ़रमायें तो सही !!
मैं दोज़खों बहिश्त की परवाह करूँ क्यूँ !
या तख़्ते सुलेमान की भी चाह करूँ क्यूँ !!
मुझ को तो उनके दर की मुबारिक गदागरी !
एक बार ख़ाकसार को बुलवायें तो सही !!
आतिशे हिज़्र कब तलक सीने में दबायें !
दिले नातवां घबराया ले ले के बलायें !!
वो कहता है परवाने का जौहर दिखाऊँ मैं !
एक बार नूरे -शम्माँ को दिखलायें तो सही !!

==========

शब्दार्थ :- दम - जान / लब -होंठ / जुवां - जिव्हा / तराना - गुणगान / क़ासिद - देवदूत / फ़साना - हाल

करम -कृपा / दोज़खों बहिश्त - नर्क और स्वर्ग / गदागरी - भिक्षुक बनना / ख़ाकसार - सेवक /

आतिशे हिज्र - विरहाग्नि / दिले नातवां - कमज़ोर दिल/ परवाना - शलभ / शम्मां - दीपक

पी जाऊँ पेट भरके मैं उल्फ़त का जामे जम !
बरआये दिल की हसरत मिट जाये रंजो ग़म !!
जीऊँ कि मरूँ पीके तेरा सागरे जमीं !
उल्फ़त से भरा जाम पिला जायें तो सही !
दर्शन जो ज़ात पाक के जायें जो मुझको मिल !
सीने को चीर कर मैं दिखलाऊँ हाले दिल !!
ग़मे फ़िराक़ हिज्र के नक़्शे हैं सब यहीं !
एक बार नज़रें करम वो फ़रमायें तो सही !!
दिल उनकी नज़र में करके क़दम पाक पकड़ लूँ !
और रिश्तए उल्फ़त में बस ख़ूब जकड लूँ !!
आँखों में बन्द कर के उन्हें जाने न दूँ कहीं !
दामन को मेरे हाथ में पकड़ायें तो सही !!
दीदार के नदीदे दोनों दीद हमारे !
बरसा रहे हैं रात दिन आँसू के फुहारे !!
फुरक़त में जान दे रहा कोई प्रेम दीवाना !
क़ासिद तू कहना उनसे ये मेरा फ़साना !!

==========

शब्दार्थ :- उल्फ़त - प्रेम / जामे जम - मदिरा का प्याला / बरआये - पूरी हो / सागरे जमी - प्रेम की मदिरा का प्याला/ पाक - पवित्र / ग़मे फ़िराक़ - विरह व्यथा / हिज्र - जुदाई / नज़रे करम - कृपा दृष्टि / रिश्तए उल्फ़त - प्रेम का नाता/ दीदार - दर्शन / नदीदे - इच्छुक / दीद - आँखें / फुरक़त - विरह

==========

ग़ज़ल

दिखादे जल्लवे दीदार अपना ----------

दिखादे जल्लवे दीदार अपना,
शफ़ा पाये दिले बीमार अपना !
नहीं कुछ दीन और ईमाँ का सामाँ,
न सर सिजदे में ही आया झुकाना !
मगर है जुस्तजू में दिल दीवाना,
शबो दिन चश्म से आँसू बहाना !
तेरे दर पै बैठे देके धरना,
दिखादे जल्लवे दीदार अपना !
दिले दीवाने में है धुन समाई,
तस्सबुर ने ज़मी सर पै उठाई !
सही जाती नहीं तेरी जुदाई,
रहम कर बख़्श दे अपनी गदाई !
तेरा अहसान हो और काम अपना,
दिखादे जल्लवे दीदार अपना !

==========

शब्दार्थ :- शफ़ा - रोग मुक्त होना / सिजदा - प्रणाम / जुस्तजू - प्रयत्न / शबो दिन - रात दिन / तसब्बुर - ध्यान / ज़मी - धरती / जुदाई - विरह / गदाई - भिखारी पन !

तेरी हर सिम्त बहदत की दुहाई,
सभी जा धूम है रहमत की छाई !
तेरी अज़मत से मिलती है बड़ाई,
न आई मेरी क़िस्मत में रसाई !
बहुत आज़ुर्दा ए प्यारे न करना,
दिखादे जल्लवे दीदार अपना !
छुपायें क्या फ़साना अबतरी का,
तुही है राज़दाँ दिल की लगी का !
तुही हामी है बिगड़ी बेहतरी का,
मुझे दावा है तेरी मुंसिफ़ी का !
मुनासिब है मेरा इन्साफ करना,
दिखादे जल्लवे दीदार अपना !
हविस दोनों जहानों की मिटाई,
बिसाले राम की दिल में समाई !
नहीं अब गैर की दिल में रसाई,
मुझे है तेरे क़दमों की दुहाई !
उठा दस्ते करम देरी न करना, दिखादे जल्लवे दीदार अपना !

==========

शब्दार्थ :- सिम्त - और / वहदत - एकेश्वरवाद / जा - ओर / अज़मत - बड़प्पन / रसाई - पहुँच / फ़साना - हाल / अबतरी - मज़बूरी / राज़ दा - भेद जानने वाला / हामी - साथी / विसाले राम - राम मिलन / दस्ते करम - कृपा का हाथ

बहर ख़स्ता किश्ती आ पडी है,
शबो दिन बस तुझी से लौ लगी है !
ज़ईफ़ी और क़ज़ा सर पर खड़ी है,
हटा परदा कि वक्ते आख़िरी है !
बहुत नज़दीक दुनियाँ से गुज़रना,
दिखादे जल्लवे दीदार अपना !
तुम्हारे हिज़्र ने ये दिन दिखाये,
यगाने सारे बेगाने बनाये !
अलम लाख़ों सहे और ग़म उठाये,
पड़े हैं दर पै अब धूनी रमाये !
लुटा बैठे सभी घरबार अपना,
दिखादे जल्लवे दीदार अपना !
मेरी नाक़ामियाँ सुनकर सिहाले,
मेरी बदनामियों पर मुस्कराले !
चिढाले जी जलाले या रुला ले,
जहाँ की हसरतों का खूं बहाले !
मगर इक बार कह दे 'कृष्ण' अपना,
दिखादे जल्लवे दीदार अपना !

==========

शब्दार्थ :- बहर - सागर / ख़स्ता - टूटी / ज़ईफ़ी - बुढ़ापा / कज़ा - मौत / हिज़्र - विरह / यगाने - अपने /अलम - दुःख / हसरत - इच्छा

ग़ज़ल

साक़ी चमन में आके अगर बेनक़ाब हो ----------

साक़ी चमन में आके अगर बेनक़ाब हो !

कलियाँ बनें सुराहियाँ शबनम शराब हो !

तौबा हो लब पै, हाथ में जामे-शराब हो !

दुनियाँ के साथ क्यों मेरी उक़बा ख़राब हो !

दुनियाँ-ए-हुस्नो-इश्क़ में गर इन्तख़ाब हो !

मेरा जबाब हो न तुम्हारा जबाब हो !

नज़्ज़ारये 'हबीब' तो मुश्किल नहीं मगर !

वो क्या करे कि जिसका मुक़ददर ख़राब हो !

==========

शब्दार्थ :- साक़ी - गुरु / चमन - सत्संग रूपी बग़ीचा / बेनक़ाब =प्रगट / कलियाँ - जिज्ञासु / शबनम -बरसती हुई गुरु-कृपा / तौबा - बुरी बातों को छोड़ने का प्राण / लब - होंठ / जामे-शराब -प्रेम रूपी मदिरा का प्याला /

उक़बा - परलोक / दुनियाँ-ए-हुस्नो-इश्क़--सच खंड (जहाँ प्रेम ही प्रेम है, आनन्द ही आनन्द है)/ इन्तख़ाब- चुनाब / नज़्ज़ारये 'हबीब' - प्रभु के दर्शन (हबीब कवि का नाम भी है)

==========

ग़ज़ल

सरापा दीद बन कर हसरते दीदार में आये ----------

सरापा दीद बन कर हसरते दीदार में आये !
मौहब्बत आज़माने मंज़िले दीदार में आये ,
जिसे महबूब बनना हो निगाहे यार में आये,
ख़ुदा जिनको न मिलता हो, तेरे दरबार में आये ! १

बड़ी दिलकश मौहब्बत की अदाओं का ये मरकज़ है,
सरापा इश्क़ में डूबी अदाओं का ये मरकज़ है,
चमन फ़िरदौस रहमत की घटाओं का ये मरकज़ है,
गुलिस्ताने हक़ीक़त की फ़िज़ाओं का ये मरकज़ है,
जिसे फूलों में रहना हो वो इस गुलज़ार में आये ! २

ये वो मरकज़ है जिस पर ज़िन्दगी तकमील पाती है,
ख़ुदाई बा-ख़ुदा ख़ुद बा-अदब इस दर पै आती है,
यहाँ पर शाने रहमत हर घड़ी चक्कर लगाती है,
यहाँ एलाने हक़ होता है दुनियाँ सर झुकाती है,
ख़रीदारे मौहब्बत क्यों न इस बाज़ार में आये ! ३

==========

शब्दार्थ :- सरापा - सर से पैर तक / दीद -दर्शन / हसरते दीदार - दर्शन की लालसा / महबूब - प्यारा / निगाहे यार - प्रीतम का कृपा पात्र बनना / दिलकश - मनमोहक / गुलिस्ताने हक़ीक़त - ईश्वर की फुलवारी /फ़िज़ाओं - बहारों / मरकज़ - केंद्र / गुलज़ार - बग़ीचा / तकमील - पूर्णता / दर - दरवाज़ा / शाने रहमत - ईश्वर की कृपा

ग़ज़ल

देख अफ़शाँ मेरी उल्फ़त का कहीं राज़ न हो ----------

देख अफ़शाँ मेरी उल्फ़त का कहीं राज़ न हो !
इस तरह तोड़ दे मेरे दिल को कि आवाज़ न हो !!
मैं हूँ और तुम हो, हमारा कोई हमराज़ न हो !
गुफ्तगूँ तुम से तसब्बुर में हो आवाज़ न हो !!
दर्दे दिल शोर मचाता है कि मैं आह करूँ!
जब्ते दिल हलक़ दबाता है कि आवाज़ न हो !!
ज़िबह के वक्त फड़कते हैं जो बाज़ू सैयाद के !
अब भी बुलबुल को कहीं हसरते परवाज़ न हो !!
उस पतंगे की हक़ीक़त कोई मुझसे पूछे !
सामने शम्मां हो लेकिन परे परवाज़ न हो !!
मुस्करा कर वो शबे वस्ल किसी का कहना !
राज़ की बात है अफ़शा कहीं ये राज़ न हो !!
राज़ के नाम से नफ़रत है तो लाज़िम है तुझे !
ग़ैर का दिल में भी पोशीदा कोई राज़ न हो !!

==========

शब्दार्थ :- अफ़शाँ - प्रकट / उल्फ़त - प्रेम / राज़ -भेद / हमराज़ - भेद जानने वाला / गुफ़्तगूं - बातचीत /तसब्बुर - ध्यान / जब्ते दिल - दल को काबू में करना / ज़िबह - गला काटना / सैयाद - शिकारी / हसरते परवाज़ - उड़ने की लालसा / परे परवाज़ - उड़ने वाले का पंख / शबे वस्ल - मिलन की रात /पोशीदा - छिपा हुआ

ग़ज़ल

तेरे कूचे में अरमानों की दुनियाँ ले के आया हूँ ----------

तेरे कूचे में अरमानों की दुनियाँ ले के आया हूँ !
तुझी पर जान देने की तमन्ना ले के आया हूँ !
मिला था दिल से दिल जब याद कर ओ भूलने वाले !
उसी बीते ज़माने का सहारा ले के आया हूँ !
जिगर में दर्द दिल में टीस और आँखों में दो आसूँ !
ज़रा तो देख ले आकर मैं क्या-क्या ले के आया हूँ !
वो अफ़साना मौहब्बत का कभी जो तूने छेड़ा था !
वही अफ़साना ओंठों पर अधूरा ले के आया हूँ !

==========

शब्दार्थ :- अरमान - अभिलाषा / तमन्ना - इच्छा / अफ़साना = क़िस्सा

==========

संत के पास जाकर बैठे रहो और मन में कोई ख़्याल मत आने दो ! फ़ायदा हो जायेगा ! बेवक़ूफ़ लोग समझते हैं कि हम संत के पास गए लेकिन उसने हमसे बात भी नहीं की ! बात की या नहीं की, इससे तुम्हें क्या मतलब ? हर वक्त उसके अन्दर से आत्मा के प्रकाश की और आनंद की शीतल धारें निकल रही हैं, जिससे फ़ायदा हो रहा है ! सूरज चमक रहा है ! अगर तुमने अपनी आँखें बंद कर रखी हैं तो इसमें सूरज का क्या दोष है ? क्या वह किसी से बात करता है ? नहीं ! लेकिन उसके प्रकाश और गर्मी से सब को फ़ायदा होता है !

---------- परमसंत डॉ. श्रीकृष्ण लाल जी महाराज

ग़ज़ल

नाम तेरा लब पै रहे हरदम मेरे ----------

नाम तेरा लब पै रहे हरदम मेरे,
दिल को तस्कीन हो चैन मिलता रहे,
ये सितारे सहर झिलमिलाते रहें,
तेरा बीमार करवट बदलता रहे !
सामने तुम आओ तो इस तरह,
मुझको दीदार हो तेरा परदा रहे,
पास चिलमन के यों आप बैठे रहें,
नूर छन-छन के बाहर निकलत रहे !
आओ हम तुम करें मिल के अहदे-वफ़ा,
जो न बदले ज़माने की रफ़्तार से,
सुबह बदला करे शाम बदला करे,
हम न बदलें ज़माना बदलता रहे !
यों अगर मौत आवे तो क्या बात है,
मैं ये समझूंगा मैराजे उल्फ़त है ये ,

==========

शब्दार्थ :- लब -होंठ / तस्कीन -शांति / सहर - सवेरा / दीदार - दर्शन / चिलमन - पर्दा / नूर -प्रकाश

अहदे बफ़ा - दोस्ती का वायदा / मैराजे उल्फ़त - प्रेम की पराकाष्ठा /

नाम लब पै तेरा दिल में याद तेरी,
शक्ल आँखों में हो दम निकलता रहे !
जान जाएगी 'ज़ाहिद' तो कुछ ग़म नहीं,
आरज़ू है यही तुम हमारे रहो,
है मेरी आप से रौनक़े ज़िन्दगी,
मत बदलना ज़माना बदलता रहे !

रौनके ज़िन्दगी - जीवन की शोभा

==========

समझते हो गुरु को मनुष्य और चाहते हो कि वह ईश्वर का दर्शन करा दे ? पहले गुरु से प्रीति करो, फिर उसकी बात पर विश्वास करो तब प्रतीति पैदा होगी ! बिना प्रतीति के गुरु को ईश्वर नहीं समझोगे और जब तक यह भाव नहीं आयेगा तब तक ईश्वर का अनुभव कैसे होगा ? दोनों का माध्यम जब तक एक नहीं होगा तब तक दर्शन नहीं होंगे ! यह शंका कि यह इन्सान है, दर्शन करा सकेंगे भी या नहीं, जब तक मौज़ूद है, तब तक गुरु राग़िब नहीं होता ! जब तक गुरु राग़िब नहीं होगा तो दर्शन कैसे होंगे ? गुरु में चाहे सब कुछ सामर्थ्य हो, जब तक शिष्य में गुरु के प्रति प्रीति और प्रतीती नहीं होगी तब तक फ़ायदा नहीं होगा ! इसीलिए भगवान कृष्ण ने कहा है कि जो जिस भाव से मुझे भजता है मैं उसी रूप में दर्शन देता हूँ !

---------- परमसंत डॉ. श्रीकृष्ण लाल जी महाराज

दुआ

जामे राहत से सभी सरशार हों----------

जामे राहत से सभी सरशार हों,
सब के सब नाबाक़िफ़े आज़ार हों !
सब को हासिल हों फ़राग़े ज़िन्दगी,
सब का रोशन हो चिराग़े ज़िन्दगी !!
सब की खैरो-आफ़ियत की है दुआ,
अहले आलम में हो हर एक का भला !!
मुब्तिलाये दरदो ग़म कोई न हो,
तेरा महरूमे - करम कोई न हो !!

शब्दार्थ :- जामे राहत - आनंद की मदिरा का प्याला / सरशार - छके रहना / नावाक़िफ़े आज़ार - दुःख मुसीबत से अनिभिज्ञ / फ़राग़े ज़िन्दगी - मोक्ष , जीवन सफल होना / रोशन - ज्योतिर्मय / चिराग़े ज़िन्दगी - जीवन का दीपक /खैरोआफ़ियत - कुशल / अहले आलम - सृष्टि का प्रत्येक प्राणी / मुब्तिलाये दरदो ग़म - दुःख मुसीबत में फंसना / महरूमे - करम - कृपा से वंचित होना

==========

ग़ज़ल

ये तन उनका, ये मन उनका, ये जी उनका, ये जां उनकी--------

बराये नाम भी अपना नहीं बाकी निशाँ रखना ,
न तन रखना , न मन रखना, न जी रखना, न जां रखना ।
हकीके इश्क में हमने ये जाना देर से जाना,
मिटाकर खुद की हस्ती को उन्हे जाकर के पहचाना ।
तमाम उम्र गफलत में काटी पर नहीं जाना,
कि हम मामूल हैं, बराये नाम हैं, और औकात भी आना ।
मैं इक पत्थर बिना उस्ताद के तो यूँ ही रह जाता ,
उन्होने यूँ तराशा और ये मूरत बना डाली ।
भरम में क्यूँ रहूँ मेरा तो इसमें रत्तीभर क्या है ,
ये तन उनका, ये मन उनका , ये जी उनका , ये जां उनकी ।।

..डॉ बी एस जौहरी

ग़ज़ल

लोग कुछ मस्जिद गए, कुछ बुतख़ाने गए----------

लोग कुछ मस्जिद गये कुछ लोग बुतख़ाने गये
हम सुकूँ पाने को केवल तेरे काशाने गये

बैठकर साक़ी के आगे आँख से पीते थे जो
वो अलग से बज़्म में रिंदों की पहचाने गये

रास्तों या मंज़िलों से भी उन्हे क्या वास्ता
तुम जिधर को चल दिये, उस ओर दीवाने गये

अपनी जानिब भी कभी शायद निगाहे यार हो
आस ये मन में लिए उसकी झलक पाने गये

आग में कूदेंगे तो जल जायेंगे फिर भी सदा
शमअ की नज़दीक़ियां पाने को परवाने गये

बज़्म में रौनक़ थी जिनसे महफ़िलों में जान थी
राम जाने अब कहाँ वो लोग मस्ताने गये ---------(अनिल कुलश्रेष्ठ)

काशाने = स्थान

ग़ज़ल

तुम्हारे दर पे आकर ही सबब पाया है जीने का ----------

तुम्हारे दर पे आकर ही सबब पाया है जीने का
हमें क्यों फ़िक्र हो इसकी कि होगा क्या सफ़ीने का

बढ़ा है दर्द जब-जब भी न की कोई दवा इसकी
चला आया तेरे दर पर दिखाने ज़ख़्म सीने का

पिलाये जा मुझे साक़ी कि जब तक होश बाकी है
कमी तुझको नहीं मय की मुझे भी शौक़ पीने का

सुकूँ पाता है वो बंदा रज़ा में तेरी जो राज़ी
न कोई नफ़्स का झगड़ा न कोई दिल में कीने का

झुकाने को जबीं जब मिल गया दरबार मुर्शिद का
तो काशी की तमन्ना क्या, क्यों अरमां हो मदीने का

--- अनिल कुलश्रेष्ठ

शब्दार्थ सफ़ीना = जहाज़ नफ़्स = वासना कीना = द्वेष /जबीं = माथा

ग़ज़ल

जब तलक है सांस तब तक बंदगी क़ायम रहे ----------

मुश्किलें आयें भी तो दिल में ख़ुशी क़ायम रहे
जब तलक है सांस तब तक बंदगी क़ायम रहे

मेरे मौला तू मिले या ना मिले मंज़ूर है
पर मुसलसल खोजने की तिश्नगी क़ायम रहे

ख़ुशनसीबी से मिला है उनसे जामे आशिक़ी
अब नशा इसका न उतरे बेख़ुदी क़ायम रहे

बाहरी दुनिया में चाहे कोई नज्ज़ारा न हो
भीतरी आँखों की पर दीदावरी क़ायम रहे

ताअबद क़ायम रहे साक़ी ये तेरा मैकदा
भीड़ रिंदों की रहे और मैकशी क़ायम रहे

==========

शब्दार्थ : तिश्नगी = प्यास दीदावरी = दृष्टि ताअबद = अनंत काल तक

==========

ग़ज़ल

इस तरह से बाद में तेरे जिया किये----------

इस तरह से बाद में तेरे जिया किये
दिल में उतर के रोज़ ही तुझसे मिला किये

जाकर भी दूर कौन से तुम हो सके जुदा
नज़रें जिधर को फेर दीं तुम ही दिखा किये

हरगिज़ न लेंगे जाम भी ग़ैरों के हाथ से
अरसा गुज़र चुका है यही फ़ैसला किये

ताउम्र बन सका न कभी हमसे शुक्रिया
नेमत के ढेर आपने फिर भी अता किये

ऐसा नहीं कि राह में बहके न हों कभी
संभले हैं तेरे नाम से जब जब गिरा किये ----------(अनिल कुलश्रेष्ठ)

ग़ज़ल

चारसू सारे नज़ारे आपके----------

चारसू सारे नज़ारे आपके
चांद सूरज और सितारे आपके

राह में ख़ुशियां मिलें या रंजो ग़म
ये सफ़र केवल सहारे आपके

लोग दीवाना कहें, कहते रहें
इश्क़ में हम तो हैं मारे आपके

इश्क़, हसरत, ग़म, ख़ुशी, वादे, वफ़ा
तोहफ़े सारे के सारे आपके

ज़िंदगी आसान बस उसकी हुई
जो समझ पाया इशारे आपके

ग़ज़ल

यही है आरज़ू जब तक रहे ये ज़िंदगी क़ायम----------

यही है आरज़ू जब तक रहे ये ज़िंदगी क़ायम
तेरे दरबार में मुर्शिद रहे बस हाज़िरी क़ायम

बुज़ुर्गाने नसब ने ख़ुद सँभाला है विरासत को
रखी है तीरगी के दौर में भी रौशनी क़ायम

वसीला पीर का लेकर फ़क़त है इल्तिजा इतनी
खुदाया ताअबद रखना हमारी बंदगी क़ायम

निभाये बज़्म सब रस्मो रिवायत दीने उल्फ़त की
इलाही नक़्शबंदी की रहे परवानगी क़ायम
(अनिल कुलश्रेष्ठ)

शब्दार्थ : बुज़ुर्गाने नसब = वंश के पूर्वज / तीरगी = अंधेरा, / वसीला = माध्यम / ताअबद = अनंतकाल तपरवानगी = आज्ञा

==========